



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 390]

नई दिल्ली, बुधवार, नवम्बर 5, 2008/कार्तिक 14, 1930

No. 390]

NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 5, 2008/KARTIKA 14, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 5 नवम्बर, 2008

अंतिम जांच परिणाम

(निर्णायक समीक्षा)

विषय: चीन जन.गण. तथा सिंगापुर के मूल के या वहां से निर्यातित डी (-) पैरा हाइड्राक्सी फिनाइल ग्लाइसीन मिथाइल पोटाशियम डेन सॉल्ट (पीएचपीजी डी एस) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी (निर्णायक समीक्षा) जांच।

सं. 14/23/2002 (एसएसआर)-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर शुल्क का आकलन एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है), को ध्यान में रखते हुए;

क. पृष्ठभूमि

2. चूंकि वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने चीन जन.गण. तथा सिंगापुर (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पीएचपीजी डी एस (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की अनुशंसा की थी। प्राधिकारी के प्रारंभिक जांच परिणाम और अंतिम जांच परिणाम क्रमशः दिनांक 1-10-2002 और 24-6-2003 की अधिसूचनाओं द्वारा प्रकाशित किए गए थे। जांच परिणामों के आधार पर राजस्व विभाग द्वारा क्रमशः 11-11-2002 की अधिसूचना सं. 124/2002-सी.शु. और 24-7-2003 की अधिसूचना सं. 117/2003-सी.शु. के तहत संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु पर अनंतिम शुल्क और निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था।

24.7.2003 की अधिसूचना सं. 117/2003-सी.शु. के तहत संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु पर अनंतिम शुल्क और निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था।

निर्दिष्ट प्राधिकारी को उक्त अधिनियम की धारा 9 क (5) के अनुसार संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने और उसे आगे और 5 वर्ष तक इस आधार पर जारी रखने का अनुरोध करते हुए मै. डी सी एम श्रीराम इंडस्ट्रीज लिमिटेड (इकाई: दौराला आर्गेनिक्स लि.) से एक पुष्टिकृत आवेदन प्राप्त हुआ कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद पाटन जारी है और घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों द्वारा पाटन के कारण क्षति होना जारी है। यह भी दावा किया गया था कि संबद्ध देशों के खिलाफ उपाय को समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग को पाटन और क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना रहेगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस बात की जांच करने के लिए कि क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन, क्षति या दोनों के जारी रहने या उनकी पुनरावृत्ति होने की संभावना रहेगी, पाटनरोधी (निर्णायक समीक्षा) दिनांक 6.11.2007 को एक सार्वजनिक सूचना सं. 14/23/2002(एसएसआर)-डीजीएडी जारी की, जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया है।

ख. प्रक्रिया

4. इन कार्यवाहियों में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

- (i) समीक्षा शुरू करने के बाद प्राधिकारी ने संगत सूचना मांगने के लिए नियम 6(4) के अनुसार जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के साथ संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावलियां भेजीं;
- (ii) नियमानुसार संगत सूचना मांगते हुए भारत में घरेलू उद्योग को भी सूचनाएं भेजी गई थीं;
- (iii) नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरूआत के बारे में नई दिल्ली स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को इस अनुरोध के साथ सूचित किया गया था कि वे निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए अपने देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें;
- (iv) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगते हुए भारत में संबद्ध वस्तु के ज्ञात आयातकों और उपभोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं;
- (v) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से जांच अवधि और पिछले तीन वर्षों के लिए आयातों के सौदेवार आंकड़े मांगे गए थे और उन पर इस जांच में भरोसा किया गया है ;
- (vi) जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां व्यापक परिचालन हेतु फिक्की, सीआईआई और एसोचेम को भी भेजी गई थीं;
- (vii) मै. कनेका सिंगापुर कंपनी (पीटीई) लि., सिंगापुर ने जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर दिया और सूचना उपलब्ध करवाई। निर्यातक द्वारा उपलब्ध

कराई गई सूचना का संभव सीमा तक सत्यापन किया गया है और इस जांच परिणाम में भरोसा किया गया है।

- (viii) घरेलू उद्योग होने के नाते मै. डीसीएम श्रीराम इंडस्ट्रीज लि. (इकाई : मै. दौराला आर्गेनिक्स लि.) ने सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए। प्राधिकारी ने हुई क्षति की जांच करने, उत्पादन की इष्टतम लागत, भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत निकालने तथा इस बात का पता लगाने कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा, सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर संभव सीमा तक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सीमा का सत्यापन किया;
- (ix) प्राधिकारी ने पक्षकारों की मौखिक सुनवाई करने के लिए 3.4.2008 को एक सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की जिसमें हितबद्ध पक्षकारों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों पर इस जांच परिणाम में विचार किया गया है;
- (x) नियम 6(7) के अनुसार प्राधिकारी ने अनुरोध पर निरीक्षण हेतु विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत समस्त साक्ष्य के अगोपनीय रूपांतरण वाली सार्वजनिक फाइल सभी हितबद्ध पार्टियों के लिए उपलब्ध रखी;
- (xi) जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में और सार्वजनिक सुनवाई के बाद विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा व्यक्त विचारों पर उस सीमा तक संगत पैराग्राफों में विचार किया गया है जिस सीमा तक ये नियमानुसार संगत हैं और मामले पर प्रभाव डालते हैं;
- (xii) उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधार का प्रकटन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष किया गया था और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर इन जांच परिणामों में विधिवत विचार भी किया गया है। तथापि घरेलू उद्योग ने प्रकटन विवरण पर कोई टिप्पणी प्रस्तुत नहीं की है;
- (xiii) यह जांच 1 अप्रैल, 2006 से 31 मार्च, 2007 तक की जांच अवधि के लिए की गई थी। तथापि, क्षति विश्लेषण वर्ष 2003-04, 2004-05, 2005-06 और जांच अवधि के लिए किया गया है।

ख.1 विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तुएं

5. वर्तमान जांच में शामिल उत्पाद डी (-) पैरा हाइड्राक्सी फिनाइल ग्लाइसीन मिथाइल पोटेशियम डेन सॉल्ट (पीएचपीजी डी एस) है जिसे निम्नलिखित के रूप में भी जाना जाता है :

- (i) डी (-) पैरा हाइड्राक्सी फिनाइल ग्लाइसीन मिथाइल पोटेशियम डेन सॉल्ट (मिथाइल पोटेशियम)
- (ii) डी (-) पैरा हाइड्राक्सी फिनाइल ग्लाइसीन डेनसॉल्ट (मिथाइल पोटेशियम)
- (iii) डी (-) पैरा हाइड्राक्सी फिनाइल ग्लाइसीन मिथाइल पोटेशियम डेन सॉल्ट

(iv) डी (-) पैरा हाइड्राक्सी फिनाइल ग्लाइसीन मिथाइल एसीटो एसीटेट पोटेशियम साल्ट (डेनसॉल्ट)

6. भारत में मुख्यतः "डी (-) पैराहाइड्रोक्सिल फिनाइल ग्लाइसीन बेस" (जिसे एतदपश्चात् "पीएचपीजी बेस" कहा जाता है) का आयात किया जाता है जिसे तत्पश्चात् विभिन्न आयातकों/विनिर्माताओं द्वारा तत्स्थानी "डी (-) पैरा हाइड्राक्सी फिनाइल ग्लाइसीन मिथाइल पोटेशियम डेन सॉल्ट" में परिवर्तित कर दिया जाता है और आगे इसका उपयोग एमोक्सीसिलिन तथा सेफाड्रोक्सिल (अर्थात् बल्क औषधि) के उत्पादन में किया जाता है ।

7. दूसरे शब्दों में पीएचपीजी बेस का उपयोग सीधे एमोक्सीसिलीन आदि के उत्पादन हेतु नहीं किया जा सकता । ऐसा तभी होता है जब पीएचपीजी बेस को पीएचपीजी डीएस में परिवर्तित कर दिया जाता है; उसका उपयोग एमोक्सीसिलिन आदि के उत्पादन हेतु किया जाता है । यह परिवर्तन या तो पीएचपीजी/पीएचपीजीडीएस के विनिर्माताओं की ओर से या फिर प्रयोक्ताओं अर्थात् एमोक्सीसिलीन आदि के उत्पादकों की ओर से किया जा सकता है ।

8. समस्त प्रकार का पीएचपीजी अध्याय शीर्ष 29.42 में वर्गीकृत है ।

9. मूल जांच में जांच किया गया उत्पाद डी (-) पैरा हाइड्राक्सी फिनाइल ग्लाइसीन मिथाइल पोटेशियम डेन सॉल्ट (पीएचपीजी डीएस) है और इसलिए यही उत्पाद इस जांच के क्षेत्र में शामिल होगा ।

10. घरेलू उद्योग द्वारा भी समान विशेषताओं और विनिर्देशनों वाले पीएचपीजी डीएस का उत्पादन किया जाता है । किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा विचाराधीन उत्पाद या समान वस्तु के मुद्दे पर कोई तर्क नहीं दिया गया है और इसलिए प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद और संबद्ध देशों से विनिर्मित या निर्यातित उत्पाद पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) के अनुसार समान वस्तु है ।

ग. घरेलू उद्योग

11. मूल जांच में पाटनरोधी जांच हेतु आवेदन घरेलू उद्योग की ओर से मै. डीसीएम श्रीराम इंडस्ट्रीज लि. (इकाई : मै. दौराला आर्गेनिक्स लि.) की ओर से दायर किया गया था । वर्तमान निर्णायक समीक्षा में सूचना/ आंकड़े मै. डीसीएम श्रीराम इंडस्ट्रीज लि. द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं । हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया था कि इस उत्पाद के अन्य उत्पादक भी हैं । प्राधिकारी ने इस आरोप की सत्यता की पुष्टि करने के लिए मै. सूर्या फार्मास्यूटीकल्स लि., चंडीगढ़ और मै. केडीएल बायोटेक लि., मुंबई से क्षमता एवं उत्पादन के बारे में सूचना मांगी थी । तथापि, इन कंपनियों ने प्राधिकारी के पत्रों का उत्तर नहीं दिया था ।

ग.1 समीक्षा की शुरुआत और दिए गए तर्क

आवेदक घरेलू उद्योग के विचार

12. भारत में पीजीपीएच डेन सॉल्ट का पाटन पिछले कई वर्षों से किया जा रहा है और सिंगापुर तथा चीन जन.गण. से आयात पिछले कई वर्षों से हो रहे हैं। सिंगापुर और चीन जन.गण. के निर्यातकों ने भारत में आयात के अपने हिस्से को बनाए रखने और उसमें वृद्धि करने के लिए भारत में कीमतों में कमी करनी शुरू कर दी थी।

13. तथापि, सिंगापुर और चीन जन.गण. के मूल के या वहां से निर्यातित पीएचपीजी डेनसॉल्ट के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद घरेलू उद्योग ने घरेलू बाजार में अपनी उपस्थिति इसलिए महसूस की कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों पर पाटनरोधी शुल्क के रूप में प्रतिस्पर्धा का समान अवसर प्रदान कर दिया गया था।

14. इसके अलावा, मै. कनेका, सिंगापुर से एक आवेदन के आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मध्यावधिक समीक्षा जांच शुरू की और इसके अंतिम जांच परिणाम 18 अगस्त, 2006 की अधिसूचना सं. 15/13/2005-डीजीएडी के तहत जारी किए गए थे।

15. इस बात को नोट करना महत्वपूर्ण है कि प्राधिकारी के विस्तृत जांच परिणामों में यह निष्कर्ष निकाला गया था कि पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद सिंगापुर के निर्यातक द्वारा संबद्ध वस्तु का पाटन जारी है। चीन की वस्तुओं का भारत में पाटन भी सिंगापुर से आयातों से भी कम कीमत पर किया जा रहा है।

16. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए हम निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह अनुरोध करते हैं कि सिंगापुर और चीन जन.गण. के मूल के या वहां से निर्यातित पीएचपीजी डेन सॉल्ट पर पाटनरोधी शुल्क लगाना जारी रखा जाए अन्यथा सिंगापुर और चीन जन.गण. से भारी मात्रा में संबद्ध वस्तु का पाटन जारी रहने और उसमें वृद्धि होने की संभावना है।

17. ई.यू. के देश भारत को संबद्ध सामग्री के निर्यातों के अन्य प्रमुख ज्ञात स्रोत हैं। यद्यपि इन देशों द्वारा अत्यंत कम कीमतों पर संबद्ध सामग्री का निर्यात किया जा रहा है तथापि, घरेलू उद्योग ई.यू. से संबद्ध सामग्री के आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी जांच शुरू करने के अनुरोध के साथ माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी से पृथक रूप से संपर्क कर रहे हैं।

18. किसी निर्णायक समीक्षा जांच में जो जांच लागू होती है और जिस बात की जांच की जाती है वह यह है कि क्या लागू पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से पाटन एवं घरेलू उद्योग को हुई क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। इस प्रकार वास्तविक क्षति की मौजूदगी पाटनरोधी शुल्क जारी रखने के लिए पूर्वापेक्षा नहीं है बल्कि ही घरेलू उद्योग का यह मानना हो कि संबद्ध सामग्री के आयातों से उन्हें सतत क्षति हुई है।

19. पाटनरोधी अधिनियम के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और ; (ख) पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच का प्रावधान है ।

20. प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है । तथापि, चूंकि वर्तमान जांच मौजूदा पाटनरोधी शुल्क जारी रखने के लिए एक समीक्षा जांच है, इसलिए जो बात संगत है वह यह है कि इस बात की जांच की जाए कि क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटित कीमतों पर आयात अत्यधिक मात्रा में जारी रहेंगे । यह खासकर सिंगापुर के निर्यातक के पास बेशी क्षमता और घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की कोई बिक्री न होने की बात को ध्यान में रखते हुए और भारत को निर्यात की कीमतों के स्तर को देखते हुए, संबद्ध देशों से भारत में भारत में निर्यात का भारी मात्रा में पाटन करने के लिए निर्यातकों के पूर्ववर्ती सतत व्यवहार को ध्यान में रखते हुए ऐसी स्थिति बनने की अत्यंत संभावना है ।

21. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।

22. जैसा कि पहले अनुरोध किया गया है सिंगापुर और चीन जन.गण. के निर्यातक पाटित कीमतों पर संबद्ध सामग्री का निर्यात कर रहे हैं जिससे घरेलू उद्योग बाजार में बने रहने के लिए अपनी कीमतें कम करने के लिए बाध्य हुआ है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को घाटा हुआ है । यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाता है तो अब तक घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त मात्रा का नुकसान होगा और इसके परिणामस्वरूप कीमतों में आगे और गिरावट आएगी । इससे घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय घाटा होगा ।

23. घरेलू उद्योग घरेलू बाजार में प्रस्तावित क्षति रहित कीमत से काफी कम कीमत पर संबद्ध वस्तु की बिक्री करने के लिए बाध्य हुआ है । पाटनरोधी शुल्क समाप्त/निरस्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देशों के आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में आगे और कटौती होगी जिससे क्षति की पुनरावृत्ति होगी ।

24. याचिकाकर्ता प्राधिकारी का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहेगा कि पूर्ववर्ती जांच केवल वास्तविक क्षति के लिए नहीं की गई थी अपितु वास्तविक अवनति के लिए भी की गई थी क्योंकि घरेलू उद्योग शुरूआती चरण में था । इस समय घरेलू उद्योग केवल 5 वर्ष पुराना है जो बाजार में उपस्थिति दर्ज करने की कोशिश कर रहा है । पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए

जाने से घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग प्रतिकूलतः प्रभावित होगा और वह भी तक जब घरेलू उद्योग ने पाटनरोधी शुल्क लगाने के जरिए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्रतिस्पर्धा का समान अवसर सुनिश्चित किए जाने के कारण अपनी क्षमता में आगे और वृद्धि की है। हम इस बात को एक बार फिर दोहराना चाहेंगे कि घरेलू उद्योग को लाभ इसलिए हुआ है क्योंकि पाटनरोधी शुल्क लागू था और वह भी केवल मात्रा के संबंध में न कि कीमत के संबंध में।

25. घरेलू उद्योग पीएचपीजी डेनसाल्ट के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगाकर प्रदत्त उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति के कारण ही अपने आरंभिक चरण से अभी बाहर आया है, यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाता है तो इससे पाटित कीमतों पर सिंगापुर तथा चीन जन.गण. से आयातों में वृद्धि होगी और घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इन वर्षों के दौरान सिंगापुर और चीन जन.गण. से पाटित निर्यातों के कारण सिंगापुर और चीन जन.गण. से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में भारी गिरावट आई है। पीएचपीजी डेनसॉल्ट पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के तुरंत बाद घरेलू उद्योग ने भारत के भीतर बाजार हिस्सा प्राप्त कर लिया है। घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता बढ़ाई है और वह समूची घरेलू मांग को पूरा करने में सक्षम है। अभी भी घरेलू उद्योग का हिस्सा ***% है। यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाता है तो यह निश्चित है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आगे और कमी आएगी जो इसने पाटनरोधी शुल्क के रूप में घरेलू उद्योग को प्रदत्त प्रतिस्पर्धा के समान अवसर के कारण पूर्ववर्ती वर्षों में हासिल किया था।

26. पीएचपीजी डेनसाल्ट पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से पूर्व घरेलू उद्योग की उत्पादन क्षमता केवल ***% थी लेकिन पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद संवर्धित स्थापित क्षमता पर क्षमता उपयोग बढ़कर लगभग ***% हो गया है। यदि पीएचपीजी डेनसॉल्ट पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाता है तो इससे संबद्ध देशों से पाटित वस्तु के लिए निर्बाध द्वार खुल जाएंगे और इससे क्षमता उपयोग में भारी गिरावट आएगी।

27. पीएचपीजी डेनसाल्ट पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद घरेलू उद्योग ने पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में अपने घाटे में कमी की है और उत्पादन में वृद्धि हुई है जिससे उच्चतर उत्पादन पर निर्धारित लागत की खपत हुई है जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन की लागत कम हुई है। तथापि, यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाता तो यह निश्चित है कि पाटित आयातों के कारण कम बिक्री मात्रा की वजह से घाटे में और अधिक वृद्धि होगी। इससे उच्चतर उत्पादन लागत आएगी और परिणामतः घरेलू उद्योग को और अधिक घाटा होगा।

28. भारत में पीएचपीजी डेनसाल्ट की मांग घरेलू उद्योग की मौजूदा क्षमता से अधिक है और घरेलू उद्योग मौजूदा क्षमताओं की बाधाओं को दूर कर घरेलू बाजार की समूची मांग को पूरा कर सकता है। चूंकि डी ओ एक बड़ा औद्योगिक समूह है इसलिए इस उत्पाद के लिए विशेष रूप से पूंजी जुटाने के मुद्दे पर अलग से उत्तर नहीं दिया जा सकता।

29. सिंगापुर का मुख्य निर्यातक अर्थात् मै. कनेका एक ईओयू है और वह कोई घरेलू बिक्री नहीं करता है। इस इकाई के पास अत्यधिक क्षमताएं हैं। इस कंपनी द्वारा पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद लगातार पाटन किया जा रहा है। इस तथ्य की पुष्टि हाल ही में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा की गई मध्यावधिक समीक्षा जांच में की गई है। इसी प्रकार चीन की कंपनियों के पास अत्यधिक क्षमताएं हैं और वे पाटित निर्यातों से विश्व बाजार को लक्ष्य बना रही हैं। इसके अलावा ये कंपनियां गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली स्थितियों में प्रचालन कर रही हैं जिसके तहत वे उस कीमत पर निर्यात कर रही हैं जिनका निर्धारण बाजारी शक्तियों द्वारा न होकर अन्य विचारों से किया जाता है। इन कंपनियों द्वारा सिंगापुर से निर्यात की कीमत से कम कीमत पर संबद्ध वस्तु का निर्यात किया जा रहा है। इससे यह सिद्ध होता है कि चीन और सिंगापुर के उत्पादकों के पास भारी निर्यात योग्य बेशी क्षमताएं हैं और उनकी आदत भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन करने की रही है। पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी इन देशों से मात्राएं काफी अधिक रही हैं। पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के तुरंत बाद आयातों की मात्रा में गिरावट आई है और अब इनमें पुनः वृद्धि हो गई है। तथापि, यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाता है तो यह निश्चित है कि आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि होगी जैसा कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से पूर्व हुआ था। पाटित आयातों के बाजार हिस्से में आगे और बढ़ोत्तरी होगी।

मै. कनेका सिंगापुर कं.लि. के विचार

30. सिंगापुर से निर्यातों के संबंध में कीमत कटौती ऋणात्मक है। स्पेन से आयातों की मात्रा सिंगापुर और चीन जन.गण. से काफी अधिक है। स्पेन से आयात की कीमत सिंगापुर से आयात की कीमत से कम थी और स्पेन से आयात जाहिर तौर पर पाटित कीमत पर हुए थे।

31. क्षति का संचयन अवांछित है क्योंकि मै. कनेका और चीन जन.गण. के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के तहत संचयी निर्धारण अपेक्षित नहीं है। चूंकि विद्यमान पाटनरोधी शुल्क के साथ दोनों मामलों में कीमत कटौती ऋणात्मक है और यह कारणात्मक संबंध के लिए संगत कारक है इसलिए संचयी निर्धारण के प्रयोजनार्थ यह देखा जाएगा कि सिंगापुर और चीन जन.गण. से आयातों की पहुंच कीमत में पर्याप्त अंतर है।

32. मै. दौराला की बिक्री कीमत बाजार में मिल सकने वाली कीमत से और आयातों की पाटनरोधी शुल्क प्रदत्त कीमत से काफी कम है। मै. कनेका को व्यावहारिक रूप से समूची क्षति अवधि के लिए 13.51 अम.डॉ. प्रति किग्रा. तक की कीमत वसूल करने से कोई नहीं रोकता है। अतः मै. दौराला द्वारा पूछा गया यह प्रश्न पूर्णतः अनुत्तरित रहता है कि उसके द्वारा इस बैच मार्क से काफी कम कीमत क्यों ली जा रही है।

33. यद्यपि, निर्दिष्ट प्राधिकारी की यह परंपरा रही है कि मूल जांच के समय कम लागत या बाजार कीमत पर कैप्टिव हस्तांतरण पर विचार किया जाए। तथापि, उक्त कार्य प्रणाली इस स्तर तक इस मामले में अघोषित कारणों से लागू नहीं की गई है।

34. क्षति जारी रहने का तात्पर्य वास्तविक क्षति से है। दौराला द्वारा प्रस्तुत तथ्यों से साफ तौर पर यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को सतत वास्तविक क्षति हुई है। तथापि, मुख्य मुद्दा यह है कि उन्हें ऋणात्मक कटौती के बावजूद सतत क्षति हुई है। इन तथ्यों से स्पष्टतः यह पता चलता है कि सतत क्षति के कारणों को परोक्षतः आयातों से नहीं जोड़ा जा सकता है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

35. घरेलू उद्योग को सतत क्षति के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए तर्कों पर प्राधिकारी ने ध्यान दिया है। इन तर्कों को घरेलू उद्योग को हुई क्षति, पाटन एवं घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना का विश्लेषण करते समय ध्यान में रखा गया है।

घ. पाटन मार्जिन की गणना हेतु कार्य प्रणाली

पाटन का निर्धारण: सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

सिंगापुर

36. धारा 9 क (1) (ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने समस्त ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली की प्रतियां भेजीं। मै. कनेका, सिंगापुर कं. लि. (के.एस.सी.) ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर दिया और निर्धारित निर्यातक प्रश्नावली में सूचना उपलब्ध कराई। यह स्पष्ट किया गया कि संबद्ध वस्तु का सीधे प्रेषण सिंगापुर से किया गया है तथापि, बिक्री सौदे मै. कनेका कार्पोरेशन (के.एन.के.), जापान द्वारा किए जाते हैं। यह भी स्पष्ट किया गया था कि के.एस.सी. द्वारा सर्वप्रथम के.एन.के. को वस्तु का बिल भेजा जाता है जो बाद में भारत के ग्राहकों को बीजक जारी करता है। के.एस.सी. और के.एन.के. द्वारा बीजक मूल्य सहित बिक्री की सूचना उपलब्ध कराई गई थी। इस सूचना का सत्यापन मौके पर सत्यापन द्वारा किया गया था। सत्यापित सूचना पर इस जांच में भरोसा किया गया है।

सिंगापुर के लिए सामान्य मूल्य

37. सूचना का अवलोकन करने के बाद यह देखा गया है कि सिंगापुर में घरेलू बिक्री का केवल एक सौदा हुआ है। सिंगापुर में बिक्री की मात्रा व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में उसे बिक्री मानने हेतु अपर्याप्त पाई गई थी अतः उत्पादन, प्रशासनिक, बिक्री एवं सामान्य व्यय के आधार पर धारा 9 क (1)(ग)(ii) के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया गया है। इसमें सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु उचित लाभ जोड़ा गया है। इस पद्धति से सामान्य मूल्य *** अम.डॉ. प्रति किग्रा. निर्धारित किया गया है।

कनेका सिंगापुर कं. लि. (के एस सी) के लिए निर्यात कीमत

38. मै. कनेका सिंगापुर कं. लि. ने भारत को निर्यात बिक्री के बारे में सौदे वार सूचना उपलब्ध कराई । जांच अवधि के दौरान निर्यातक ने भारत को 26 सौदे किए हैं । यह देखा गया है कि निर्यातक द्वारा सूचित भारत को की गई बिक्री की कुल मात्रा डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों में सूचित मात्रा से अधिक है । निर्यात कीमत के निर्धारण में निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना पर भरोसा किया गया है । निवल निर्यात कीमत की गणना करने के लिए स्वदेशी भाड़े, दस्तावेजों, कमीशन, टी एच सी, समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा के लिए किए गए व्यय और बिक्री सहायता को घटाया गया है । इन कटौतियों को करने के बाद निवल निर्यात कीमत की गणना *** अम.डॉ./कि.ग्रा. के रूप में की गई है ।

सिंगापुर के असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

39. असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएंड एस द्वारा प्रदत्त सौदेवार ब्यौरों के आधार पर किया गया है । निवल निर्यात कीमत की गणना करने के लिए सहयोगी निर्यातकों द्वारा निर्यातों के बारे में घोषित और सत्यापित व्यय का समायोजन किया गया है । इस कार्य प्रणाली को अपनाते हुए निवल निर्यात कीमत की गणना *** अम.डॉ./कि.ग्रा. के रूप में की गई है ।

चीन जन.गण.

40. प्राधिकारी ने चीन जन.गण. के निर्यातकों को निर्यातक प्रश्नावली और बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार संबंधी प्रश्नावली की प्रतियां भेजी लेकिन किसी भी निर्यातक ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया और कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई । किसी सूचना के अभाव में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 (2) के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का अनुमान अखंडित रहता है । अतः प्राधिकारी ने उपर्युक्त अनुबंध के पैरा-7 के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारित किया है । किसी सूचना के अभाव में प्राधिकारी ने "अथवा किसी अन्य उचित आधार" की पद्धति अपनाकर सामान्य मूल्य निर्धारित किया है ।

चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य

41. प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का परिकलन कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत, घरेलू उद्योग के खपत मानक, घरेलू उद्योग की परिवर्तन लागत को हिसाब में लेते हुए और 5% की दर से लाभ जोड़कर किया गया है । इस पद्धति द्वारा सामान्य मूल्य *** अम.डॉ./कि.ग्रा. निर्धारित किया गया है ।

चीन जन.गण. के असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

42. निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएंड एस द्वारा प्रदत्त सौदेवार ब्यौरे के आधार पर किया गया है। जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. से *** मी.ट. संबद्ध वस्तु का आयात किया गया है। निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु समस्त सूचित सौदों को ध्यान में रखा गया है और निर्यात कीमत की गणना भारित औसत आधार पर की गई है। इस पद्धति द्वारा निर्यात कीमत की गणना *** अम.डॉ./किग्रा. (***) रुपए/किग्रा.) के रूप में की गई है। निवल निर्यात कीमत की गणना के लिए स्वदेशी भाड़े, समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा के लिए किए गए व्यय की कटौती की गई है। इस पद्धति द्वारा निवल निर्यात कीमत की गणना *** अम.डॉ./किग्रा. के रूप में की गई है।

पाटन मार्जिन

43. उपर्युक्तानुसार निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर प्राधिकारी ने निम्नानुसार पाटन मार्जिन निर्धारित किया है :

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य अम.डॉ./किग्रा.	निर्यात कीमत अम.डॉ./किग्रा.	पाटन मार्जिन अम.डॉ./किग्रा.	पाटन मार्जिन %
चीन जन.गण. के सभी निर्यातक	***	***	***	17.90%
कनेका सिंगापुर क. लि.	***	***	***	9.34%
सिंगापुर के असहयोगी निर्यातक	***	***	***	11.06%

निर्धारित पाटन मार्जिन अत्यधिक और न्यूनतम सीमा से अधिक है।

ड क्षति निर्धारण हेतु कार्य प्रणाली और कारणात्मक संबंध की जांच

क्षति निर्धारण

क्षति का जारी रहना

प्राधिकारी द्वारा जांच

44. प्राधिकारी ने इस बात पर ध्यान दिया है कि निर्णायक समीक्षा के लिए सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9(क)(5) के संगत उपबंध निम्नानुसार हैं :

"इस धारा के अंतर्गत लगाया गया पाटनरोधी शुल्क यदि पूर्व में समाप्त न किया जाए तो वह इस प्रकार से लगाए जाने की तारीख से 5 वर्ष की समाप्ति पर निष्प्रभावी हो जाएगा :

परंतु यदि किसी समीक्षा में केन्द्र सरकार का यह मत है कि ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन एवं क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है तो वह समय-समय पर आगे और 5 वर्ष की अवधि के लिए ऐसे अधिरोपण की अवधि को बढ़ा सकती है और इस प्रकार की आगे की अवधि ऐसे समय विस्तार के आदेश की तारीख से शुरू होगी ।"

45. पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 में निर्णायक समीक्षा करने की प्रक्रिया का प्रावधान है । समीक्षा करने के लिए नियम, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 16, 17, 18, 19 और 20 के उपबंध लागू किए गए हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमानुसार निर्णायक समीक्षा में क्षति की वर्तमान स्थिति का भी निर्धारण किया जाता है ।

46. पाटनरोधी अधिनियम के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और ; (ख) पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच का प्रावधान है । प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है । जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।

47. क्षति की वर्तमान स्थिति का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मात्रा और कीमत प्रभाव तथा कीमतों एवं लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच की है ताकि क्षति की मौजूदगी एवं पाटन एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की जांच की जा सके ।

(क) मात्रात्मक प्रभाव : पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव :

48. संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा के प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है :

1) आयातित मात्रा और संबद्ध देश का हिस्सा:

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
आयातों में बाजार हिस्सा					
सिंगापुर	मी.ट.	43.200	56.800	307.230	199.600

चीन जन.गण.	मी.ट.	0	12.000	55.400	263.100
संबद्ध देश	मी.ट.	43.200	68.800	362.630	462.700
अन्य देश	मी.ट.	166.000	451.252	291.400	1148.395
कुल आयात	मी.ट.	209.200	520.052	654.025	1611.095
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	159	839	1071
आयातों में बाजार हिस्सा					
सिंगापुर	%	20.65	10.92	46.97	12.39
चीन जन.गण.	%	0.00	2.31	8.47	16.33
संबद्ध देश	%	20.65	13.23	55.45	28.72
अन्य देश	%	79.35	86.77	44.55	71.28

49. डीजीसीआईएंड एस ने आयातों के बारे में सौदे वार आंकड़े उपलब्ध कराए हैं और इन पर इस जांच परिणाम में विश्लेषण हेतु भरोसा किया गया है। आंकड़ों से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से आयातों में वर्ष 2003-04 से जांच अवधि तक वृद्धि होती रही है। मुख्यतः पाटनरोधी शुल्क लागू न होने वाले अन्य देशों से आयातों में भी वृद्धि हुई।

50. यह नोट किया गया है कि संबद्ध वस्तु की मांग में भारी वृद्धि का पता चलता है। उभरते हुए बाजार में संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा 20.65% से बढ़कर 28.72% हो गया है। इसी अवधि के दौरान अन्य देशों से आयातों का हिस्सा 79.35% से घटकर 71.28% हो गया है।

51. यह भी नोट किया गया है कि वर्ष 2005-06 में संबद्ध देशों के हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई है जबकि जांच अवधि में गिरावट आई है। जांच अवधि में वृद्धि होने से पूर्व वर्ष 2005-06 में अन्य देशों के हिस्से में पर्याप्त गिरावट आई है।

ii) मांग उत्पादन एवं बाजार हिस्सा

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
मांग	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	131	144	299
घरेलू उद्योग	मी.ट.	***	***	***	***
निर्यात बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
कुल आयात	मी.ट.	209.200	520.052	654.025	1611.095
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग(व्यापारी बिक्री)	%	***	***	***	***
सिंगापुर से आयात	%	***	***	***	***
चीन से आयात	%	***	***	***	***
अन्य देशों से आयात	%	***	***	***	***

52. संबद्ध वस्तु की मांग की गणना घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री और सभी देशों से समस्त अयातों को जोड़कर की गई है।

53. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में मांग में 199% की वृद्धि हुई है। जांच अवधि में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा ***% से घटकर ***% हो गया है। संबद्ध देश का हिस्सा आधार वर्ष में लगभग ***% से घटकर जांच अवधि में ***% हो गया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन देशों पर पाटनरोधी शुल्क नहीं लग रहा था उन अन्य देशों का हिस्सा भी इसी अवधि में ***% से बढ़कर ***% हो गया है।

54. घरेलू उद्योग के पास पर्याप्त निर्यात कार्यकलाप हैं और इसलिए मांग का विश्लेषण घरेलू बिक्री के अलावा निर्यात बिक्री सहित किया गया है। इस पद्धति द्वारा संगणित मांग से यह पता चलता है कि मांग में वृद्धि उच्चतर दर पर हुई थी जिसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 328% की वृद्धि हुई थी। जांच अवधि में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा ***% से घटकर ***% हो गया है। जिन देशों पर पाटनरोधी शुल्क नहीं लग रहा था उन अन्य देशों का हिस्सा भी ***% से बढ़कर ***% हो गया है।

क) घरेलू उद्योग की क्षमता, क्षमता उपयोग और उत्पादन

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
क्षमता	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	135	168	168
उत्पादन	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	198	286	275
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***

55. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि वर्ष 2004-05 और 2005-06 में घरेलू उद्योग की क्षमता कम हुई है। जांच अवधि में क्षमता में कोई वृद्धि नहीं हुई थी। आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2004-05 में क्षमता में 35% तथा 2005-06 में 68% की वृद्धि हुई।

56. आधार वर्ष की तुलना में संबद्ध वस्तु के उत्पादन में वर्ष 2004-05 में 98%, 2005-06 में 186% और जांच अवधि में 175% की सतत वृद्धि हुई। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में क्षमता उपयोग में पर्याप्त सुधार हुआ। खास बात यह है कि क्षमता उपयोग अत्यधिक हुआ यद्यपि घरेलू उद्योग ने वर्ष 2004-05 और 2005-06 में क्षमता में वृद्धि की थी। यह भी नोट किया गया है कि बढ़े हुए उत्पादन का उपयोग निर्यात के प्रयोजनार्थ किया गया है। वर्ष 2003-04 में यह 17.59% था जो वर्ष 2004-05, 2005-05 और 2006-07 में बढ़कर क्रमशः 65.85%, 84.97% और 84.67% हो गया।

ख) घरेलू उद्योग की बिक्री

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
बिक्री-घरेलू	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	71	58	58
बिक्री-निर्यात	मी.ट.	***	***	***	***
कुल बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	190	295	285

57. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री घटकर 58% हो गई है। दूसरी ओर निर्यात बिक्री में भारी वृद्धि हुई और यह आधार वर्ष के 100% की तुलना में बढ़कर 1325 (सूचीबद्ध) हो गई। आधार वर्ष के 100 की तुलना में कुल बिक्री बढ़कर 285 (सूचीबद्ध) हो गई।

(ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत संबंधी प्रभाव

58. संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) तथा क्षति रहित कीमत (एनआईपी) (घरेलू उद्योग की लागत सूचना के आधार पर परिकलित) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है।

कीमत कटौती - चीन

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
निर्यात कीमत	रु./मी.टन		259.00	319.00	303.28
पहुंच मूल्य	रु./मी.टन		313.91	370.52	344.60
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./मी.टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	रु./मी.टन		***	***	***
कीमत कटौती	%		***	***	***

कीमत कटौती - सिंगापुर

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
निर्यात कीमत	रु./मी.टन	293.44	307.00	350.74	343.63
पहुंच मूल्य	रु./मी.टन	370.46	372.08	407.38	390.45
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./मी.टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	रु./मी.टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***

कीमत कटौती - संबद्ध देश

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
निर्यात कीमत	रु./मी.टन	293.44	299.02	345.85	326.37
पहुंच मूल्य	रु./मी.टन	370.46	362.41	401.70	370.84
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./मी.टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	रु./मी.टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***

कम कीमत पर बिक्री

(मूल्य रु./किग्रा. में)

निवल बिक्री प्राप्ति	***
क्षति रहित कीमत	***
पहुंच मूल्य (सिंगापुर)	390.45
कम कीमत पर बिक्री (सिंगापुर)	***
कम कीमत पर बिक्री (%)	***
कम कीमत पर बिक्री रेंज	नगेटिव
पहुंच मूल्य (चीन जन.गण.)	344.60
कम कीमत पर बिक्री (चीन जन.गण.)	***
कम कीमत पर बिक्री (%)	***
कम कीमत पर बिक्री रेंज	5-10%
पहुंच मूल्य (संबद्ध देश)	370.84
कम कीमत पर बिक्री (चीन जन.गण.)	***
कम कीमत पर बिक्री (%)	***
कम कीमत पर बिक्री रेंज	0-5%

59. जांच अवधि के दौरान पाटित आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य और घरेलू बाजार में घरेलू बिक्री के बीच संबद्ध वस्तु के लिए तुलना की गई थी। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करने में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत करों, रिबेट, छूट और कमीशन का समायोजन किया गया है।

60. संबद्ध देशों से निर्यात की कीमत में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। निर्यात कीमत में वर्ष 2003-04 से 2005-06 तक वृद्धि हुई है लेकिन जांच अवधि में मामूली गिरावट आई। इसी अवधि के दौरान सीमाशुल्क आधार वर्ष में 25% से घटकर जांच अवधि में 12.5% हो गया है। संबद्ध देशों से पहुंच मूल्य में वर्ष 2005-06 तक वृद्धि जारी रही किंतु जांच अवधि में मामूली गिरावट आई। वर्ष 2003-04 और 2004-05 में बिक्री कीमत एक समान बनी रही। यद्यपि वर्ष 2005-06 में कीमत में 4 रु./किग्रा. की वृद्धि हुई। जांच अवधि में कीमत में 12 रुपए/किग्रा. की गिरावट आई। संबद्ध देशों से आयातों (पाटन रोधी शुल्क युक्त) द्वारा बिक्री कीमत में कटौती की गई। चीन जन.गण. से वर्ष 2005-06 और जांच अवधि में कटौती सकारात्मक रही थी। जांच अवधि में यह 5-10 % के बीच में थी। सिंगापुर से कटौती वर्ष 2005-06 और जांच अवधि में ऋणात्मक रही थी।

61. बिक्री लागत से संबंधित आंकड़ों से यह पता चलता है कि तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बिक्री लागत में 43 रु./किग्रा. की गिरावट आई जबकि इसी अवधि के दौरान बिक्री कीमत में 13 रुपए/किग्रा. की गिरावट आई थी।

62. कम कीमत पर बिक्री क्षति निर्धारण का एक प्रमुख संकेतक है; इस प्रकार प्राधिकारी ने क्षति रहित कीमत निकाली है और उसकी तुलना कम कीमत पर बिक्री की मात्रा निकालने के लिए पहुंच मूल्य के साथ की है। जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए उत्पादन लागत पर समुचित विचार कर घरेलू उत्पादक के लिए क्षति रहित कीमत का आकलन किया गया है। विश्लेषण से यह पता चलता है कि चीन से संबद्ध वस्तु का भारित मूल्य 5-10% के बीच रहा जबकि सिंगापुर के मामले में यह ऋणात्मक था। संबद्ध देशों के संबंध में यह 5% से कम था।

क्षति संबंधी अन्य मापदंडों की जांच

63. घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमत पर पाटित आयातों और आयात की मात्रा एवं मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री के साथ-साथ पूर्ववर्ती खंड में विभिन्न भागों के बाजार हिस्से के साथ मांग की पद्धति की जांच करने के बाद घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का संकेत देने वाले अन्य आर्थिक मापदंडों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है।

(i) लाभ एवं नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित प्रभाव

(व्यापारी बिक्री)

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
लाभप्रदता					
बिक्री लागत भारित	रू./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	94	101	91
बिक्री कीमत	रू./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	102	98
लाभ/हानि	रू./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-34	-99	-29
लाभ/हानि(पीबीआईटी)	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-19	-70	-13
नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-19	-68	-15

64. घरेलू उद्योग की व्यापारी बिक्री की लाभप्रदता का विश्लेषण कंपनी के रिकार्डों से किया गया है ।

65. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष के 100 की तुलना में बिक्री लागत घटकर 91 (सूचीबद्ध) हो गई है । इसी अवधि के दौरान बिक्री कीमत घटकर 98(सूचीबद्ध) हो गई है । रुपए के रुप में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बिक्री लागत में 29 रुपए/किग्रा. की गिरावट आई जबकि इसी अवधि के दौरान बिक्री कीमत में 6 रुपए/किग्रा. की गिरावट आई । तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में बिक्री लागत में 34 रुपए/किग्रा. और इसी अवधि के दौरान बिक्री कीमत में 13 रुपए/किग्रा. की गिरावट आई । परिणामतः आधार वर्ष के -100 की तुलना में जांच अवधि में लाभप्रदता में सुधार हुआ और प्रति इकाई घाटा घटकर -29(सूचीबद्ध) हो गया । लाभ/हानि तथा नकद लाभ में ऐसी ही प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है । घाटा (सूचीबद्ध) आधार वर्ष में -100 से घटकर जांच अवधि में -16.46 हो गया । इसी प्रकार आधार वर्ष में -100 की तुलना में जांच अवधि में नकद लाभ बढ़कर -15 हो गया ।

66. घरेलू उद्योग एक बहु उत्पाद कंपनी है और इसलिए उत्पाद के नकद प्रवाह की वास्तविक मात्रा का निर्धारण संभव नहीं हुआ । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में प्रति इकाई घाटे में गिरावट आई । सूचीबद्ध रुप में आधार वर्ष के -100 की तुलना में जांच अवधि

में यह -29 था । पीबीआईटी में लाभ/हानि में ऐसी ही प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है । सूचीबद्ध रूप में घाटा आधार वर्ष के -100 की तुलना में -17 रहा था ।

67. घरेलू उत्पादक एक बहु उत्पाद कंपनी होने के कारण समान वस्तु के लिए नकद प्रवाह का निर्धारण करना संभव नहीं है । तथापि, नकद लाभ का निर्धारण किया गया है और प्रवृत्ति से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान नकद लाभ में सुधार हुआ है ।

(ii) रोजगार एवं मजदूरी

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
कर्मचारी	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	149	151	154
कर्मचारियों को संदत्त मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	145	228	254

68. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में कर्मचारियों की संख्या में 64% की वृद्धि हुई । कर्मचारियों को संदत्त मजदूरी में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 154% की वृद्धि आ हुई ।

(iii) लाभप्रदता

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रति दिवस उत्पादकता	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	197	285	274
प्रति दिन प्रति कर्मचारी उत्पादन	किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	137	189	179

69. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में प्रति दिवस उत्पादन के रूप में संगणित उत्पादकता में पर्याप्त सुधार हुआ है । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में उत्पादकता में 175% की वृद्धि हुई है । प्रति दिवस प्रति कर्मचारी उत्पादन के संबंध में यह आधार वर्ष के 100 की तुलना में जांच अवधि में बढ़कर 179 (सूचीबद्ध) हो गया ।

(iv) माल सूची

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
औसत मालसूची	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	359	497	308
बिक्री दिवसों की संख्या	दिन	***	***	***	***

70. माल सूची के आंकड़ों से यह पता चलता है कि औसत मालसूची में वृद्धि हुई है । तथापि, दिवसों की बिक्री के संबंध में (घरेलू एवं निर्यात बिक्री) मालसूची वर्ष 2003-04 में 2 से कम दिन से बढ़कर जांच अवधि में 4 दिन हो गई । कंपनी की लेखा परंपरा के अनुसार बिक्री के लिए डिब्बाबंद साकग्री जिसके लिए बीजक पहले ही तैयार किया जा चुका है, को तब तक निर्यात बिक्री के रूप में प्रदर्शित नहीं किया जाता है जब तक कि कंपनी द्वारा लदान बिल प्राप्त न हो गया है ।

(V) निवेश पर आय और पूंजी जुटाने की क्षमता

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
एनएफए	लाख रुपए	***	***	***	***
कार्यशील पूंजी	लाख रुपए	***	***	***	***
लगाई गई पूंजी - एनएफए आधार (कुल)	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	119	119
लगाई पूंजी - घरेलू	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	40	24	24
लगाई गई पूंजी पर आय (घरेलू)	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-47	-298	-53

71. घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान लगाई गई पूंजी में वृद्धि की है । लगाई गई पूंजी में यह वृद्धि निवल अचल परिसंपत्ति और कार्यशील पूंजी के कारण हुई है । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में दौरान कुल पूंजी में 19% की वृद्धि हुई है । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में लगाई गई पूंजी में आय पर सुधार हुआ है । यद्यपि यह आधार वर्ष से जांच अवधि तक ऋणात्मक चल रहा था ।

(vi) कीमत को प्रभावित करने वाले कारक

72. संबद्ध देशों से निर्यात कीमत के मूल्यांकन से यह पता चलता है कि आधार वर्ष से जांच अवधि तक कीमतें कम हुई हैं। तथापि, सीमाशुल्क में आधार वर्ष से जांच अवधि तक कमी आई है जो वर्ष 2003-04 में 25% से घटकर जांच अवधि में 12.5% हो गया है। संबद्ध वस्तु का पहुंच मूल्य वर्ष 2003-04 से 2005-06 तक बढ़ा है। यद्यपि जांच अवधि में इसमें गिरावट आई है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री लागत घटकर 91 हो गई है।

क्षति संबंधी निष्कर्ष

73. संबद्ध वस्तु की मांग में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 199% की वृद्धि हुई। इसी अवधि के दौरान जांच अवधि में घरेलू उद्योग की क्षमता में 68% की वृद्धि हुई। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में उत्पादन में 175% की वृद्धि हुई। क्षमता उपयोग (संवर्धित क्षमता) में पर्याप्त सुधार हुआ और यह अकेले 90% से अधिक थी। जांच अवधि और तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के दौरान क्षमता उपयोग 90% से अधिक था। घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है और यह आधार वर्ष के 100 की तुलना में जांच अवधि में घटकर 58 (सूचीबद्ध) हो गई। दूसरी ओर निर्यात बिक्री में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई और यह आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बढ़कर 185 हो गई। बिक्री मंदों की औसत मालसूची आधार वर्ष में 4 दिन थी जो जांच अवधि में 4 दिन हो गई। कुल बिक्री से पता चलता है कि यद्यपि क्षमता में विस्तार के बावजूद घरेलू बिक्री में कमी आई है। तथापि, घरेलू उद्योग ने निर्यात बिक्री में पर्याप्त वृद्धि की है।

74. जांच अवधि के दौरान घरेलू बिक्री लागत आधार वर्ष के 100 की तुलना में जांच अवधि में घटकर 91(सूचीबद्ध) हो गई। इसी अवधि के दौरान बिक्री कीमत भी आधार वर्ष के 100 की तुलना में घटकर 91(सूचीबद्ध) हो गई। रूपए के रूप में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बिक्री लागत में 39 रूपए/किग्रा. की गिरावट आई जबकि इसी अवधि में बिक्री कीमत में 6 रूपए/किग्रा. की गिरावट आई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में बिक्री लागत में 44 रूपए प्रति किग्रा. और बिक्री कीमत में इसी अवधि में 13 रूपए/किग्रा. की गिरावट आई। लाभ/हानि प्रति इकाई से यह पता चलता है कि आधार वर्ष के -100 की तुलना में यह घटकर -29 (सूचीबद्ध) हो गई। कुल हानि (पीबीआईटी) से इसी प्रकार की प्रवृत्ति का पता चलता है और यह इसी अवधि के दौरान 100 की तुलना में जांच अवधि में घटकर -13(सूचीबद्ध) हो गई। इसी प्रकार घरेलू बिक्री पर लगाई गई पूंजी पर आय में सुधार प्रदर्शित होता है। यद्यपि समूची क्षति अवधि के दौरान यह ऋणात्मक रही है।

75. उपर्युक्त मापदंडों से यह पता चलता है कि घरेलू बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग को बिक्री में गिरावट के रूप में क्षति जारी रही। लाभ एवं लगाई गई पूंजी पर आय के संबंध में कार्य निष्पादन में सुधार हुआ लेकिन उसे घाटा जारी रहा।

अन्य ज्ञात कारक

अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमत

76. यह देखा गया है कि समस्त देशों से जांच अवधि में कुल आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई । यह जांच अवधि में 1611 मी.टन था । जांच अवधि में संबद्ध देशों से भिन्न देशों से हुआ आयातों का हिस्सा 71.28% रहा था । यह देखा गया था कि डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों के अनुसार जांच अवधि में अन्य देशों द्वारा निर्यात कीमत सिंगापुर की निर्यात कीमत से तुलनीय थी । अन्य देशों से आयात मुख्यतः स्पेन से हुए थे । प्राधिकारी नोट करते हैं कि अन्य देशों से आयात संबद्ध देशों से हुए आयातों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं और वे घरेलू उद्योग से भी प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं । निर्णायक समीक्षा के आवेदन में घरेलू उद्योग ने यह उल्लेख किया है कि वे जांच शुरू करने के लिए अन्य देशों के खिलाफ आवेदन दायर करेंगे । प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा ऐसा कोई आवेदन दायर नहीं किया गया है ।

मांग में कमी और/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

77. विचाराधीन उत्पाद की मांग में पर्याप्त वृद्धि हुई है । मांग में कमी कोई संभावित कारण नहीं है जिसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का हेतु माना जा सके ।

विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

78. संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार नहीं रहा है । अतः यह कारक घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं हो सकता है ।

प्रौद्योगिकी विकास एवं निर्यात निष्पादन

79. उत्पाद के उत्पादन हेतु प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । प्रौद्योगिकी विकास क्षति का कारक नहीं है ।

80. घरेलू उद्योग ने पर्याप्त निर्यात कार्यकलाप किया है । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग के निर्यात में 185% की वृद्धि हुई । यह भी नोट किया गया है कि उत्पादन का उत्तरोत्तर उपयोग निर्यात प्रयोजन हेतु किया गया है । वर्ष 2003-04 में यह 17.59% था जो वर्ष 2004-05, 2005-06 और 2006-07 में बढ़कर क्रमशः 65.85%, 84.97% और 84.67% हो गया ।

घरेलू उद्योग की उत्पादकता

81. प्रतिदिन और प्रति कर्मचारी उत्पादन के रूप में निर्धारित घरेलू उद्योग की उत्पादकता में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान पर्याप्त सुधार हुआ है।

कारणात्मक संबंध

82. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में संबद्ध वस्तु की मांग में पर्याप्त वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की संवर्धित क्षमता के बाद भी यह देश की मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। आपूर्ति और मांग में अंतर को देखते हुए आयात होना लाजिमी है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू बिक्री में घरेलू उद्योग के हिस्से में पर्याप्त गिरावट आई है। सिंगापुर का हिस्सा जांच अवधि में कम होने से पूर्व वर्ष 2003-04 से 2005-06 तक बढ़ा है। चीन जन.गण. के हिस्से में आधार वर्ष से जांच अवधि तक वृद्धि जारी रही। आधार वर्ष से जांच अवधि तक अन्य देशों मुख्यतः स्पेन से आयातों के हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई। प्राधिकारी नोट करते हैं कि स्पेन से आयात सिंगापुर की कीमत से तुलनीय रहे थे। प्राधिकारी ने यह भी नोट किया कि घरेलू उद्योग ने अपने निर्यातों में पर्याप्त वृद्धि की जिनका निर्यात बिक्री में उसके उत्पादन का 80% से अधिक हिस्सा रहा जिससे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग ने निर्यात बिक्री पर ध्यान केंद्रित किया है।

83. प्राधिकारी ने यह भी नोट किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा संदर्भ कीमत से कम कीमत पर अर्थात् उस कीमत से कम कीमत पर जिस पर देश में आयात नहीं हो सकते हैं, संबद्ध वस्तु की बिक्री की जा रही है। इस आशय का कोई उचित स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है कि घरेलू उद्योग ने संदर्भ कीमत से कम कीमत पर उत्पाद की बिक्री क्यों जारी रखी। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में वर्ष 2003-04 से 2005-06 तक परिवर्तन नहीं हुआ है जबकि आधार वर्ष की तुलना में क्षमता में वर्ष 2004-05 में 35% और जांच अवधि में 68% की वृद्धि हुई। इसके अलावा, घरेलू उद्योग अपने निर्यात कार्यकलाप बढ़ाकर क्षमता का 90% से अधिक का उपयोग करने की स्थिति में था।

84. उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि बिक्री कीमत, क्षमता वृद्धि और उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग का निर्णय आयातों और कीमतों के संबंध में प्रासंगिक नहीं था जिससे आगे यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से आयातों और घरेलू बिक्री पर घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

पाटन और क्षति जारी रहने की संभावना

घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध

85. मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होगी। वर्तमान समीक्षा का प्रयोजन और उसके क्षेत्र का उद्देश्य इस बात की पुष्टि

करना है कि क्या मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन या क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है या नहीं । उदाहरणार्थ इस प्रकार की किसी संभावना का उल्लेख सतत पाटन तथा क्षति के साक्ष्य या ऐसे साक्ष्य द्वारा किया जा सकता है कि मौजूदा उपायों या निर्यातक की मौजूदा परिस्थितियों या बाजारी स्थितियों की मौजूदगी के कारण आंशिक या एकमात्र क्षति की उलट स्थिति ऐसी होगी जिससे आगे और क्षतिकारी पाटन की संभावना बन जाएगी ।

86. इसके परिणामस्वरूप पाटन और क्षति की पुष्टि पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 5 के अनुसरण में उल्लिखित पाटनरोधी कार्यवाहियों में की जानी चाहिए जबकि मुख्य ध्यान पाटन और क्षति जारी रहने/उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के बारे में सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 क(5) के प्रथम परंतुक के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 23 के अंतर्गत समीक्षा पर लगाया गया है ।

87. मूल जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा लागू की गई क्षति की अवधारणा का प्राथमिक व्यवहारिक महत्व यह है कि क्या वास्तविक क्षति हुई है या इसका खतरा बना हुआ है जबकि समीक्षा याचिका में प्रयुक्त जांच और क्षति की अवधारणा वर्तमान उपायों की समाप्ति की स्थिति में क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने से संबंधित है । इसके बाद यह तथ्य आता है कि समीक्षा कार्यवाहियों में क्षति विश्लेषण मूलतः घरेलू उद्योग की स्थिति में आगे और सुधार एवं उद्गम के देश में संबद्ध वस्तु के विनिर्माताओं और निर्यातकों पर केंद्रित होता है ।

88. क्षति की दोनों अवधारणाओं में अंतर के कारण मूलतः अलग-अलग परिस्थितियां हैं । दूसरी ओर नई पाटनरोधी कार्रवाई पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 5 के अनुसरण में शुरू की जाती है जबकि समीक्षा कार्रवाई पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 23 के अनुसरण में शुरू की जाती है । परवर्ती मामले में परिस्थितियां लागू उपायों से अनिवार्यतः प्रभावित होती हैं क्योंकि घरेलू उद्योग की स्थिति सामान्यतः उस समय खराब होगी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पाटित आयातों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा का समान स्तर सुनिश्चित नहीं किया जाएगा ।

89. पाटनरोधी उपाय क्षति को समाप्त करने के लिए लागू किया जाता है । समीक्षा जांच से विद्यमान उपायों के कारण कोई क्षति या क्षति में कमी की जा सकती है । परिणामतः समीक्षा जांच के दायरे के भीतर विभिन्न क्षति संबंधी कारकों की सार्थक व्याख्या मूल पाटनरोधी जांच की तर्ज पर नहीं की जा सकती है । अतः यह विश्लेषण पारंपरिक घटकों अर्थात् पाटनरोधी उपायों के निरसन (या समाप्ति) के प्रभाव पर केंद्रित है ।

90. निर्यातक देशों में बेशी उत्पादन क्षमता क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है । तथापि, संबंधित देश के मूल के आयातों के अभाव या आयात मात्रा में कमी पाटनरोधी उपायों के निरसन या समाप्ति को न्यायोचित ठहराने के लिए पर्याप्त नहीं है । न ही समीक्षा कार्रवाई में ऐसी परिस्थितियां विभिन्न देशों से आयातों द्वारा हुई संभावित क्षति की गणना में शामिल होती हैं ।

91. घरेलू उद्योग का अनुरोध है कि सिंगापुर और चीन के निर्यातकों की भारत को किए जाने वाले निर्यात के संबंध में विगत परंपरा को ध्यान में रखते हुए पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की जरूरत है।

पाटन जारी रहने की संभावना

92. संबद्ध वस्तु का निर्यात अत्यंत कम और पाटित कीमतों पर किया जा रहा है। पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी चीन और सिंगापुर के निर्यातकों ने पाटन जारी रखा है। इस प्रकार ऐसी स्थिति में जब चीन और सिंगापुर के उत्पादन पाटनरोधी शुल्क के बावजूद पर्याप्त मात्रा में निर्यात करने में समर्थ रहे हैं, यह स्वाभाविक है कि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में मात्रा में वृद्धि ही होगी। यदि पाटनरोधी शुल्क की अवधि आगे और 5 वर्ष के लिए नहीं बढ़ाई जाती है तो पाटन पर्याप्त मात्रा में जारी रहने की संभावना है।

93. मूल जांच के समय और इस समय विद्यमान मापदंडों/परिस्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। उपर्युक्त प्रस्तुत आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है अपितु पर्याप्त भी है। मूल जांच के समय जो परिस्थितियां विद्यमान थीं वे अभी भी बनी हुई हैं। यह स्पष्ट है कि पाटन जारी रहने की संभावना है। निम्नलिखित कुछ ऐसे विचार हैं जिनसे यह पता चलता है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने या उनकी अवधि आगे और 5 वर्ष न बढ़ाए जाने की स्थिति में पाटन उल्लेखनीय स्तर पर जारी रहेगा।

चीन और सिंगापुर के उत्पादकों के पास बेशी क्षमताएं और उनका निर्यात अभिमुखीकरण

94. चीन जन.गण. में उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमताएं उनकी घरेलू बाजार में मांग की तुलना में काफी अधिक हैं। चीन के उत्पादकों द्वारा तीसरे देश के बाजारों को भारी मात्रा में निर्यात किए जा रहे हैं जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में आयात की मात्रा में पर्याप्त वृद्धि होगी। इसके अलावा, यह स्पष्ट है कि सिंगापुर की मै. कनेका, सिंगापुर मूलतः एक निर्यातमुखी इकाई है। सिंगापुर में संबद्ध सामग्री की कोई घरेलू बिक्री नहीं होती है। निर्यातक ने केवल निर्यात हेतु भारी क्षमताएं निर्मित की हैं और भारत उसका मुख्य लक्ष्य है। इसके अलावा, निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी पाटन की प्रक्रिया में संलिप्तता के बारे में निर्यातक के पूर्ववृत्त की विधिवत पुष्टि हाल ही में संपन्न मध्यावधि समीक्षा में हो गई है। मै. कनेका, सिंगापुर का पूर्ववृत्त और व्यवहार इस प्रकार का होने के कारण यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन में आगे और वृद्धि होगी और घरेलू उद्योग को परिणामी वास्तविक क्षति होगी।

95. भारत के लिए निर्यात कीमत की प्रवृत्ति और और भारत के लिए उसकी प्रचलित सीआईएफ कीमत को देखते हुए यह आवश्यक है कि वर्तमान शुल्क की समाप्ति की स्थिति में संबद्ध वस्तु के विनिर्माता, संबद्ध देश के उत्पादक असामान्य रूप से कम कीमतों पर भारत में अपनी बेशी क्षमता का पाटन करेंगे।

प्राधिकारी द्वारा जांच

96. जैसा कि इस जांच परिणाम के पूर्ववर्ती खंड में विश्लेषण किया गया है कि संबद्ध देशों से पाटन जारी है । सहयोगी निर्यातकों से किसी स्पष्टीकरण और चीन जन.गण. से किसी सूचना के अभाव में पाटन जारी रहने की संभावना है ।

क्षति जारी रहने की संभावना

97. पूर्व में किए गए विश्लेषण के अनुसार घरेलू बिक्री पर घरेलू उद्योग को क्षति जारी है । तथापि, यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत संबद्ध देशों की निर्यात कीमत के साथ प्रासंगिक या संबद्ध नहीं है । मुख्य रूप से अन्य देशों से निर्यात सिंगापुर की कीमत से तुलनीय है । तथापि, घरेलू उद्योग ने अन्य देशों से हुए निर्यातों को लक्ष्य बनाने में रुचि प्रदर्शित की है जिससे आगे यह पता चलता है कि अन्य देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत प्रभावित नहीं हुई है । प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु के उत्पादन का 80% से अधिक भाग निर्यात प्रयोजन के लिए निर्दिष्ट किया गया है जिससे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग अपना ध्यान मुख्यतः निर्यात कार्यकलाप पर केंद्रित कर रहा है ।

98. इस बात की संभावना है कि घरेलू उद्योग के लिए घरेलू बिक्री पर क्षति जारी रह सकती है । तथापि, पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी से पिछले पांच वर्षों में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में सुधार नहीं हुआ है जिससे यह पता चलता है कि पाटन से इतर कारकों द्वारा घरेलू उद्योग की कीमतें प्रभावित की जा रही हैं । अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति और घरेलू बिक्री से घरेलू उद्योग के समग्र कार्य निष्पादन पर प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है ।

झ. अंतिम जांच परिणाम

99. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :

- क. संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है;
- ख. घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;
- ग. तथापि, घरेलू उद्योग को हुई उक्त क्षति संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों से संबद्ध नहीं है ;
- घ. और संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन पर प्रभाव नहीं पड़ सकता है ।

ट. सिफारिशें

100. इस आशय के जांच परिणाम को ध्यान में रखते हुए कि पाटनरोधी शुल्क से पिछले 5 वर्षों में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन पर प्रभाव नहीं पड़ा है । अतः प्राधिकारी एतद्वारा संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क जारी न रखने की सिफारिश करते हैं ।

101. केन्द्र सरकार द्वारा स्वीकार किए जाने के बाद इस आदेश के खिलाफ कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

आर. गोपालन, निदेशक प्रशासिक

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 5th November, 2008

Final Findings

(Sunset Review)

Subject : Anti-Dumping (Sunset Review) investigations concerning imports of D(-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Methyl Potassium Salt (PHPGDS) originating in or exported from China PR and Singapore.

No. 14/23/2002 (SSR)-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, (hereinafter referred to as Act.) as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules);

A. BACKGROUND

2. Whereas, having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, the Designated Authority (herein after referred to as Authority) recommended imposition of Anti Dumping Duty on imports of PHPG DS (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China PR and Singapore (hereinafter referred to as subject countries). The preliminary findings and final findings of the Authority were published vide notifications dated 1.10.2002 and dated 24.8.2003 respectively. On the basis of findings, provisional duty and definitive anti dumping duties on the subject goods imported from subject countries were imposed by the Department of Revenue vide notifications No. 124/2002-Cus. dated 11.11.2002 and notification No. 117/2003-Cus. dated 24.7.2003 respectively.

3. The Designated Authority, in terms of section 9A (5) of said Act, received a substantiated application from M/s DCM Shriram Industries Ltd. (Unit: Daurala Organics Ltd.) requesting for review and continuation of the anti-dumping duties levied on the subject goods, for another five years on the grounds that the dumping had continued in spite of imposition of anti-dumping duty on imports of subject goods from subject countries and the domestic industry continued to suffer injury on account of dumping by the subject countries. It was also claimed that expiry of measure against the subject country would be likely to result in continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. The Designated Authority issued a Public Notice No.

14/23/2002(SSR)-DGAD dated 6.11.2007, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping (Sunset Review) investigations, to examine whether the expiry of anti dumping duty would lead to continuation or recurrence of dumping, injury or both.

B. PROCEDURE

4. In the proceedings the procedure described below has been followed:

- i) After initiation of the review the Authority sent questionnaires, alongwith the initiation notification, to the known exporters/producers in the subject countries in accordance with the Rule 6(4), to elicit relevant information.
- ii) Notices were also sent to the domestic industry in India seeking relevant information in accordance with the Rules;
- iii) The Embassies of the subject countries in New Delhi were informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers in their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time.
- iv) Questionnaires were sent to the known importers and consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4),
- v) Transaction-wise data of imports for the period of investigation and preceding three years were called from Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and have been relied upon in this investigation;
- vi) Copies of the initiation notification were also sent to FICCI, CII and ASSOCHAM for wider circulation.
- vii) M/s. Kaneka Singapore Co. (Pte.) Ltd., Singapore responded to the initiation notification and provided the information. The information provided by the exporter to the extent possible have been verified and relied upon in this findings.
- viii) M/s DCM Shriram Industries Ltd.(Unit: M/s Daurala Organics Ltd.), being domestic industry, submitted the information/data. The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to examine the injury suffered, to work out optimum cost of production, cost to make and sell the subject goods in India and so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- ix) The Authority held a public hearing on 3.4.2008 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of interested parties. The written submissions received from interested parties have been considered in this findings;
- x) The Authority made available the public file as per Rule 6(7) to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted by various interested parties for inspection, upon request.
- xi) The views expressed by various interested parties in response to the initiation notification and subsequent to the public hearing are discussed in the relevant paragraphs to the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case.
- xii) In accordance with Rule 16 of Rules Supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received thereon have also been duly considered in these

findings. The domestic industry, however, have not filed any comments on the disclosure statement.

- xiii) Investigations were carried out for the period of investigation (POI) from 1st April 2006 to 31st March 2007. However, injury analysis have been carried out for the years 2003-04, 2004-05, 2005-06 and the period of investigation.

B.1 PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

5. The product involved in the present investigation is D(-)Para Hydroxy Phenyl Glycine Methyl Potassium Dane Salt (PHPG DS) also known as :

- (i) D(-)Para Hydroxy Phenyl Glycine Methyl Potassium Dane Salt (Methyl Potassium)
- (ii) D(-)Alpha Para Hydroxy Phenyl Glycine Dane Salt (Methyl Potassium)
- (iii) D(-)Alpha Para Hydroxy Phenyl Glycine Methyl Potassium Dane Salt
- (iv) D(-)Alpha Para Hydroxy Phenyl Glycine Methyl Aceto Acetate Potassium Salt (Dane Salt)

6. Predominantly 'D (-) Para Hydroxyl Phenyl Glycine Base' (hereinafter referred to as "PHPG Base") is imported in to India, which is then converted in-situ to "D(-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Methyl Potassium Dane Salt" by the various importers/manufacturers and further used for the production of Amoxycillin and Cefadroxyl, (i.e. bulk drugs).

7. In other words, PHPG Base cannot be used directly for the production of Amoxycillin etc. It is only when PHPG Base is converted to PHPGDS; the same is used for the production of Amoxycillin etc. This conversion may either be done at the PHPG/PHPGDS manufacturers' end, or at the users end, i.e. producers of Amoxycillin etc.

8. All types of PHPG are classified in Chapter heading 29.42.

9. The product investigated in the original investigation was D(-)Para Hydroxy Phenyl Glycine Methyl Potassium Dane Salt (PHPG DS); therefore, the same product will be covered within the scope of this investigation.

10. The domestic industry also produces PHPG DS having similar characteristics and specifications. No argument has been extended, by any interested party, on the issue of product under consideration or like article and therefore, the Authority holds that the product being manufactured by the domestic industry and the product being manufactured and exported from the subject country is like article as per 2(d) of Anti Dumping Rules.

C. DOMESTIC INDUSTRY

11. In the original investigation the application for anti-dumping investigation was filed by M/s DCM Shriram Industries Ltd. (Unit M/s Daurala Organics Ltd.) on behalf of the domestic industry. In the present sunset review the information/data has been provided M/s DCM Shriram Industries Ltd. It was alleged by the interested parties that there are other producers of the product as well. The Authority in order to verify the veracity of allegation called the information concerning capacity and production from

M/s Surya Pharmaceuticals Ltd., Chandigarh and M/s KDL Biotech Ltd., Mumbai. However, these companies did not respond to the letters of the Authority.

C.1 INITIATION OF THE REVIEW AND ARGUMENTS RAISED

Views of Applicant Domestic Industry

12. PHPG Dane Salt is being dumped in India for past several years and imports have been coming for last so many years from Singapore and China PR. Exporter from Singapore and China PR had started reducing the prices in India to maintain and increase its share of import in India.

13. However, after the imposition of Anti dumping duty on import of PHPG Dane Salt originating in or exported from Singapore and China PR the domestic industry could make its presence felt in the domestic market only because of the level playing field granted by way of Anti Dumping duty on dumped imports from the subject countries.

14. Further, based on an application from M/s Kaneka, Singapore, the Designated Authority initiated a mid-term review investigation and the final findings of the same were issued vide Notification no. 15/13/2005-DGAD dated 18th August, 2006

15. It is important to note that the detailed findings of the Authority concluded that exporter from Singapore continues to dump the subject goods in spite of Anti dumping duty in place. Chinese goods are also coming into India at prices even lower than the imports from Singapore.

16. In view of the above, we request the Designated Authority to continue with the imposition of Anti dumping duty on PHPG Dane Salt originating in or exported from Singapore and China PR otherwise there is likelihood of continued and intensified dumping of subject goods in a big way from Singapore and China PR

17. Countries from EU are the other major known sources of exports of the subject material to India. Although these countries are exporting the subject materials at very low prices, the Domestic Industry is in the process of approaching the Hon'ble Designated Authority separately with a request for initiation of anti dumping investigation against imports of subject material from EU

18. In a sunset review investigation, the test to be applied and examined is whether the cessation of antidumping duty in force is likely to lead to the continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. Thus, the existence of material injury is not the pre-requisite for continuation of antidumping duty even though domestic industry considers that the imports of the subject material have resulted in continued injury to them.

19. Article 3.1 of the ADA and Annexure-II of the A.D. Rules provide for an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products, and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports.

20. The Authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing country. However, given that the present investigation is sun set review for continuation of existing Antidumping duty, what is relevant to examine here is whether the imports at dumped prices would continue in significant volume in the event of revocation of Anti-dumping duty. This is the most likely situation given the surplus capacity with exporter specially from Singapore in view of no domestic sale of the subject material in the domestic market and the level the export prices to India also, keeping in mind the consistent past behavior of the exporters to dump huge volume of export in India from the subject countries.

21. With regard to the effect of dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether dumping is resulting into significant price under cutting as compared to the prices of like product in India or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred to a significant degree.

22. As already submitted the exporters from Singapore and China PR are exporting the subject material at dumped prices, which is compelling the domestic industry to reduce its prices to remain in market and in turn, resulting into losses to the domestic industry. If the anti dumping duty is withdrawn, the volume gained by the domestic industry so far will be lost and result in further suppressing the prices. This will result into the huge financial losses to the domestic industry.

23. The domestic industry is forced to sell the subject goods well below the proposed non-injurious price in the domestic market. In the event of cessation / revocation of anti dumping duty, the imports of subject countries would intensify the under cutting the prices of domestic industry, thereby leading to recurrence of injury.

24. The petitioner would like to draw kind attention of the Authority that previous investigation was not only for material injury but also for material retardation, since the domestic industry was at an infant stage. Presently, the domestic industry is only five years old, trying to make its presence felt in the market. The revocation of antidumping duty will severely affect the capacity utilization of the domestic industry that too when the domestic industry has further enhanced its capacity because of level playing field was ensured by the Designated Authority through the imposition of antidumping duty. We would once again reiterate that domestic industry has gained, because of the Anti-dumping duty, only in terms of volume not in terms of prices.

25. The domestic industry has just come out of its nascent stage only due to the situation of fair competition granted by imposing the anti dumping duty on the import of the PHPG Dane Salt, if the anti dumping duty were to be withdrawn, this will result into the increased imports from Singapore and China PR at dumped prices and will adversely affect the sales volume of the Domestic Industry significantly. Due to dumped exports from Singapore and China PR over the years, the sales volume of the domestic industry has gone down significantly in spite of imposition of Anti-dumping duty on imports from Singapore & China PR. Immediately after the imposition of Anti dumping duty on PHPG Dane Salt, the domestic industry has gained market share within India. The domestic industry has enhanced its capacity and is capable of catering to the entire domestic demand. Still, the present market share of the domestic industry is only about ***% of the total demand of the country. If anti dumping duty is withdrawn, it is sure that the domestic industry will further lose market share, which it

has gained in the previous years due to level playing field provided to the domestic industry by way of anti dumping duty.

26. Before the imposition of Anti-Dumping Duty on PHPG Dane Salt, the capacity utilization for the domestic industry was only **%, however, after imposition of the Antidumping Duty capacity utilization has increased up to about **% on the enhanced installed capacity. If the existing anti dumping duty on PHPG Dane Salt is withdrawn, this will result into opening up of flood gates of the dumped goods from the subject countries, and will result into substantial decrease in the capacity utilization.

27. After the imposition of Anti dumping duty on PHPG Dane Salt, the domestic industry has reduced its losses compared to previous years as the production has increased resulting into absorption of fixed cost on higher production, in turn resulting into the lower cost of production. However, if anti dumping duty were to be withdrawn, it is sure that losses will further increase, due to lower sales volume on account of dumped imports. It will further result into higher production cost and as a consequence more losses to the Domestic Industry

28. The demand of the PHPG Dane Salt in India is more than the existing capacity of the domestic industry and domestic industry could cater to entire demand of the domestic market by debottle-necking of existing capacities. Since DO is part of a big industrial group issue of raising capital specifically for this product separately cannot be replied.

29. Main exporter from Singapore namely M/s Kaneka is an EOU and does not have any domestic sales. This unit has huge capacities. This company has been consistently dumping in spite of anti dumping duty in place. This fact has been established in the mid term review investigation recently conducted by the Designated Authority. Similarly Chinese companies are having huge capacities and are targeting the world market with dumped exports. Further these companies are operating under non market economy conditions making exports at a price which is not decided by market forces but other considerations. These companies are exporting the subject goods even lower than the export prices from Singapore. This establishes that producers from China and Singapore have huge exportable surplus capacities and have consistent practice to dump the subject goods into India. Even after imposition of Anti dumping Duty volumes from these countries are substantial. Quantum of imports has declined immediately after imposition of Anti-dumping duty and now again has started increasing. However, if the Anti-dumping duty is revoked, it is sure that quantum of imports will jump significantly as it was before the imposition of anti dumping duty. Dumped imports will further gain the market share.

Views of M/s Kaneka Singapore Co. Ltd.

30. The Price undercutting in respect of exports from Singapore is negative. Volume of imports from Spain is far higher than Singapore and China PR. Import price from Spain was lower than the import prices from Singapore and imports from Spain are admittedly at undumped price.

31. The cumulation of injury is unwarranted as conditions of competitions between M/s Kaneka and China PR does not warrant cumulative assessment. Whereas the Price undercutting in both the cases with the prevailing anti-dumping duty is negative

and the same is relevant factor for causal link, for the purpose of cumulative assessment, it would be seen that there is significant difference in the landed price of imports from Singapore and China PR.

32. The selling price of M/s Daurala is far lower than what it could fetch in the market and far below the anti-dumping duty paid price of the imports. Nothing prevents M/s Kaneka from recovering a price up to 13.51 US \$ per Kg. for practically entire injury period. Therefore, the question that remains fully unanswered by M/s Daurala is why it is charging a price much below this benchmark.

33. Even though the Designated Authority had a practice of considering captive transfers on lower of cost or market price at the time of original investigations, the said methodology was not applied in this case for reasons not disclosed till this stage.

34. Continuation of injury implies material injury. The facts presented by Daurala clearly show that the domestic industry has suffered continued injury. The moot point, however, is that they suffered continued injury in spite of negative undercutting. These facts clearly demonstrate that the reasons for continued injury could not be remotely linked to imports.

Examination by the Authority

35. The Authority takes note of arguments raised by the domestic industry regarding continued injury to the domestic industry. These arguments have been taken into account while analyzing the injury to the domestic industry, likelihood of recurrence of dumping and injury to the domestic industry.

D. METHODOLOGY FOR CALCULATION OF DUMPING MARGIN

Dumping Determination: Normal Value, Export Price and Dumping Margin

Singapore

36. The Authority sent copies of the questionnaire to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). M/s Kaneka Singapore Co Ltd.(KSC) responded to the initiation notification and provided information on the prescribed Exporter's Questionnaire. It was explained that the subject goods directly dispatched from Singapore, however, the sales negotiations are conducted by M/s Kaneka Corporation (KNK), Japan. It was also explained that KSC first billed the goods to KNK which in turn make the invoices to customers in India. Complete information for sales including invoices values by KSC and KNK were provided. The information was verified by conducting on the spot verification. The verified information has been relied upon in this investigation.

Normal Value for Singapore

37. On perusal of information, it has been noticed that there is only one transaction of home sale in Singapore. The quantity of sales in Singapore was found to be insufficient for considering the same as sale made in the ordinary course of trade. Therefore, the normal value has been determined in terms of Section 9A(1)(c)(ii) on the basis of cost of production, administrative, selling and general expenses. To this,

a reasonable profit was added to determine the normal value. By this method, the normal value has been determined as US\$*** per kg.

Export Price for Kaneka Singapore Co. Ltd.(KSC)

38. M/s Kaneka Singapore Co. Ltd. provided transaction-wise information on export sales to India. During the POI, the exporter has made 26 transactions to India. It has been noticed that total quantity of sales to India reported by the exporter is higher than the quantity reported in the DGCI&S data. The information provided by the exporter has been relied upon in determination of the export price. For calculating the net export price, expenses on account of inland freight, documents, commission, THC, ocean freight, marine insurance and sales assistance have been deducted. By making these deductions, the net export price has been calculated as US\$ ***/kg.

Export Price for Non-cooperating exporters from Singapore

39. For non-cooperating exporters, the export price has been determined on the basis of transaction-wise details provided by DGCI&S. For calculating the net export price, expenses disclosed and verified on exports by cooperating exporters have been adjusted. By adopting this methodology, the net export price has been calculated as US\$ ***/kg.

China PR

40. The Authority sent copies of exporter's questionnaire and questionnaire on market economy treatment to exporters in china PR, however, no exporter responded to the initiation notification and provided any information. In absence of any information, the presumption of non market economy as per para 8(2) of Annexure 1 of the AD Rules remain unrebutted. The authority, therefore, has determined the normal value in accordance with para 7 of the above said annexure. In absence of any information, the Authority has determined the normal value by adopting the method "or any other reasonable basis".

Normal Value for China PR

41. The Authority has constructed the normal value by taking the international prices of the raw material, consumption norms of the domestic industry, conversion cost of the domestic industry and by adding profit @ 5%. By this method, the normal value has been determined as US\$ ***/kg.

Export Price for Non-cooperating exporters from china PR

42. The export price has been determined on the basis of transaction-wise details provided by DGCI&S. During the POI total of *** MT of the subject goods was imported from China PR. For determination of export price, all reported transactions have been taken into account and export price has been calculated on weighted average basis. By this method the export price has been calculated as US\$ ***/kg. (Rs.*** /kg). To calculate the net export price, expenses on account of inland freight, ocean freight, marine insurance have been deducted. By this method, the net export price has been calculated as US\$ ***/kg.

Dumping Margin

43. Based on the normal value and export price as determined above, the Authority determined the dumping margin as under:

Dumping Margin

Exporter/Producer	Normal Value USD/KG.	Export Price USD/KG.	Dumping Margin USD/KG.	Dumping Margin %
All exporters from China PR	***	***	***	17.90%
Kaneta Singapore Co. Ltd.	***	***	***	9.34%
Non-cooperating exporters from Singapore	***	***	***	11.08%

The dumping margin determined is significant and above *de minimis*.

E. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

INJURY DETERMINATION

CONTINUATION OF INJURY

Examination by the Authority

44. The Authority has taken note that for the sunset review, the relevant provisions of Section 9(A)(5) of the Customs Tariff Act read as under:

"The anti-dumping duty imposed under this section shall, unless revoked earlier, cease to have effect on the expiry of five years from the date of such imposition:

Provided that if the Central Government, in a review, is of the opinion that the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury, it may, from time to time, extend the period of such imposition for a further period of five years and such further period shall commence from the date of order of such extension."

45. Rule 23 of the Anti-dumping Rules provide for procedure for conducting sunset review. For conducting the review, the provisions of Rule 6,7,8,9/10, 11, 16,17,18,19 and 20 have been made applicable. The Authority notes that as per Rules, present state of injury is also to be assessed in the sunset review.

46. In this regard Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

47. For the purpose of assessing present state of injury, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any.

(A) VOLUME EFFECT: Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry:

48. The effects of volume of dumped imports from subject country has been examined as follows:

i) Import volumes and share of the subject country:

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Market share in Imports					
Singapore	MT	43.200	56.800	307.230	199.600
China PR	MT	0	12.000	55.400	263.100
Subject Countries	MT	43.200	68.800	362.630	462.700
Other Countries	MT	166.000	451.252	291.400	1148.395
Total Imports	MT	209.200	520.052	654.025	1611.095
Trend	Indexed	100	159	839	1071
Market share in Imports					
Singapore	%	20.65	10.92	46.97	12.39
China PR	%	0.00	2.31	8.47	16.33
Subject Countries	%	20.65	13.23	55.45	28.72
Other Countries	%	79.35	86.77	44.55	71.28

49. The DGCI&S has provided transaction-wise data on imports, the same has been relied on for analysis in this finding. The data shows that imports from subject countries have been rising from 2003-04 to POI. Significantly, the imports from other countries, not attracting anti-dumping duty, have also been rising.

50. It has been noted that the demand of the subject goods indicate robust growth. The market share of the subject countries in growing market rose from 20.65% to 28.72%. During the same period the share of imports from other countries declined from 79.35% to 71.28%.

51. It has also been noted that the share of subject countries grew significantly in 2005-06 before declining in POI. The share of other countries declined significantly in 2005-06 before rising in POI.

ii) **Demand, Production and Market Shares**

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Demand	MT.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	131	144	299
Domestic Industry	MT.	***	***	***	***
Export Sales	MT.	***	***	***	***
Total Imports	MT.	209.200	520.052	654.025	1611.095
Market Share in demand					
Domestic Industry (merchant sales)	%	***	***	***	***
Imports from Singapore	%	***	***	***	***
Imports from China	%	***	***	***	***
Imports from other countries	%	***	***	***	***

52. The demand of the subject goods has been calculated by addition of domestic sales of the domestic industry and all imports from all countries.

53. The above data indicate that demand grew by 199% in POI as compared to base year. The market share of domestic industry declined from ***% to ***% in POI. The share of subject country increased from approximately ***% in base year to ***% in POI. Significantly, the share of other countries not attracting duty also increased from ***% to ***% during the same period.

54. The domestic industry have significant export activity, therefore, the analysis on demand has also been done by including the export sale in addition to the domestic sale. The demand calculated by this method indicate that growth in demand was at higher rate, it grew by 326% in POI as compared to base year. The market share of the domestic industry declined from ***% to ***% in POI. The share of subject countries during the same period increased from ***% to ***%. The share of other countries not attracting anti-dumping duty also increased from ***% to ***%.

a) **Capacity, Capacity Utilisation and Production of the Domestic Industry**

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Capacity	MT	***	***	***	***
Trends	Indexed	100	135	168	168
Production	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	198	286	275
Capacity Utilization	%	***	***	***	***

55. The above data shows that the domestic industry has increased capacity in 2004-05 and 2005-06. There was no capacity addition during the POI. The capacity increased by 35% in 2004-05 and 68% in 2005-06 and POI as compared to base year.

56. The production of the subject goods grew consistently by 98% in 2004-05, 186% in 2005-06 and 175% in POI as compared to base year. The capacity utilization improved significantly in POI as compared to base year. Significantly, the higher capacity utilization was achieved even though the domestic industry had added capacity in 2004-05 and 2005-06. It has also been noted that production has increasingly been used for export purpose. In 2003-04, it was 17.59% which increased to 65.85%, 84.97% and 84.67% in years 2004-05, 2005-06 and 2006-07 respectively.

b) Sales of Domestic Industry

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Sales - Domestic	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	71	58	58
Sales - Exports	MT	***	***	***	***
Total Sales	MT	***	***	***	***
Trends	Indexed	100	190	295	285

57. The above data shows that domestic sale of the domestic industry have declined to 58% in POI as compared to base year. On the other hand, the export sale increased dramatically and it increased to 1325 (indexed) as compared to 100 of base year. Total sale increased to 285 (indexed) as compared to 100 of the base year.

(B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

58. The impact on the prices of the domestic industry on account of dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realisation (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the domestic industry (worked out on the basis of the costing information of the domestic industry) have been compared with landed value of imports from the subject country.

Price Undercutting - China

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Export Price	Rs./MT		259.00	319.00	303.28
Landed Value	Rs./MT		313.91	370.52	344.60
NetSalesRealisation	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs./MT		***	***	***
Price Undercutting	%		***	***	***

Price Undercutting - Singapore

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Export Price	Rs./MT	293.44	307.00	350.74	343.63
Landed Value	Rs./MT	370.46	372.08	407.38	390.45
Net Sales Realisation	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***

Price Undercutting – Subject Countries

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Export Price	Rs./MT	293.44	299.02	345.85	326.37
Landed Value	Rs./MT	370.46	362.41	401.70	370.84
Net Sales Realisation	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***

Price Underselling

(Value in Rs./KG)

Net Sales Realisation	***
Non Injurious Price	***
Landed Value (Singapore)	390.45
Price Underselling (Singapore)	***
Price Underselling (%)	***
Price Underselling range	negative
Landed value (China PR)	344.60
Price Underselling (China PR)	***
Price Underselling (%)	***
Price Underselling range	5-10%
Landed value (Subject Countries)	370.84
Price Underselling (China PR)	***
Price Underselling (%)	***
Price Underselling range	0-5%

59. A comparison for subject goods during the period of investigation was made between the weighted average landed value of dumped imports and the domestic selling price in the domestic market. In determining the net sales realization of the

domestic industry, taxes, the rebates, discounts and commission offered by the domestic industry have been adjusted.

60. The export price from the subject countries has shown rising trend. The export price has increased from 2003-04 to 2005-06, however, there was slight decline in the POI. During the same period, the customs duty declined from 25% in base year to 12.5% in POI. The landed value from the subject countries continued to increase till 2005-06, however, there was slight decline in the POI. The selling price of the domestic industry continued to be same in 2003-04 and 2004-05 though there was rise of price by Rs.4/kg. in 2005-06. In the POI, the price declined by Rs.12/kg. The undercutting of selling price by imports (with anti-dumping duty) from subject countries continued. From China PR, the undercutting was positive in 2005-06 and POI. In the POI, it was in the range of 5-10%. From Singapore, the undercutting was negative in 2005-06 and POI.

61. The data on cost of sales shows that cost of sales declined by Rs.43/kg. in POI as compared to immediate preceding year whereas the selling price declined by Rs.13/kg. during the same period.

62. The price underselling is an important indicator of assessment of injury; thus, the Authority has worked out a non injurious price and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic producer by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. The analysis shows that the underselling from China PR was in the range of 5-10% whereas in the case of Singapore it was negative. In respect of subject countries, it was less than 5%.

Examination of other Injury Parameters

63. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analysed hereunder as follows:

(i) Profits and Actual and Potential Effects on Cash Flow

(Merchant sale)

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Profitability					
Cost of sales weighted	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	94	101	91
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	100	102	98
Profit/ Loss	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-34	-99	-29

Profit/Loss(PBIT)	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-19	-70	-13
Cash Profit	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trends	Indexed	-100	-19	-68	-15

64. The profitability of the merchant sales of the domestic industry has been analyzed from the records of the company:

65. The data shows that the cost of sales declined to 91 (indexed) as compared to 100 of the base year. During the same period, the selling price declined to 98 (indexed). In terms of rupees, the cost of sales declined by Rs.29/kg. in POI as compared to base year whereas the selling price declined by Rs.6/kg. during the same period. As compared to immediate preceding year the cost of sales declined by Rs.34/kg. and selling price declined by Rs.13/kg during the same period. Consequently, the profitability improved and loss per unit declined to -29 (indexed) in POI as compared to -100 of the base year. Profit/loss and cash profit show similar trend. Loss (indexed) declined from -100 in base year to -16.46 in the POI. Similarly, the cash profit improved to -15 in POI as compared to -100 in the base year.

66. The domestic industry is a multi-product company therefore it was not possible to determine the actual magnitude of cash-flow of the product. The loss per unit has declined in POI as compared to base year. In the indexed form it was -29 in POI as compared to -100 of the base year. The profit/loss in PBIT shows similar trend. The loss in indexed form was -17 as compared to -100 of the base year.

67. The domestic producer being a multi-product company, therefore, it is not possible to determine the cash flow for the like article. However, the cash profit has been determined and the trend shows that the position of cash profit has improved during the POI as compared to base year.

(ii) Employment and Wages

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Employee	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	149	151	154
Wages paid to employees	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	145	228	254

68. The number of employees increased by 54% in POI as compared to base year. The wages paid to employees increased by 154% in POI as compared to base year.

(iii) Productivity

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Production	MT	***	***	***	***
Productivity per	MT	***	***	***	***

Day					
Trend	Indexed	100	197	285	274
Production per day per employee	Kg.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	137	189	179

69. The data shows that productivity calculated as a production per day improved significantly in POI as compared to base year. The productivity increased by 175% in POI as compared to base year. In terms of production per employee per day, it increased to 179 (indexed) in POI as compared to 100 of base year.

(v) **Inventories**

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Average inventories	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	359	497	308
No. of days sales	Days	***	***	***	***

70. The data on inventory shows that average inventory has increased. However, in terms of days sales (domestic and export sale), the inventory increased from less than 2 days in 2003-04 to 4 days in POI. As per accounting practice of the company, the material packed for sale for which the invoice has already been made is not shown as export sale unless the bill of lading is received by the company.

(vi) **Return on Investment and Ability to Raise Capital**

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
NFA	Rs. Lacs	***	***	***	***
Working Capital	Rs. Lacs	***	***	***	***
Capital Employed-NFA Basis (Total)	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	109	119	119
Capital Employed-Domestic	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	40	24	24
Return on Capital Employed (Domestic)	%	***	***	***	***
Trends	Indexed	-100	-47	-298	-53

71. The domestic industry has increased the capital employed during POI as compared to base year. The increase in capital employed is on account of net fixed assets and working capital. The total capital employed increased by 19% during POI as compared to the base year. The return on capital employed improved in POI as compared to base year, though it remained negative from base year to POI.

vii) Factors affecting prices

72. Evaluation of export prices from subject countries shows that the prices have been from base year to POI. The customs duty has, however, been declining from base year to POI. From 25% in 2003-04 it declined to 12.5% during POI. The landed value of the subject goods increased from 2003-04 to 2005-06 though it declined in POI. The cost of sales of the domestic industry declined to 91 in POI as compared to the base year.

CONCLUSION ON INJURY

73. The demand of subject goods grew by 199% in POI as compared to base year. The capacity of the domestic industry has increased by 68% in POI during the same period. The production increased by 175% in POI as compared to base year. The capacity utilization (enhanced capacity) has improved substantially and it was above 90%. During the POI and immediate preceding year, the capacity utilization was above 90%. The domestic sales of the domestic industry has shown declining trend and declined to 58 (indexed) in POI as compared to 100 of the base year. The export sales on the other hand shows rising trend and it rose by 185% in POI as compared to base year. The average inventory in terms of sales was 4 days in POI as compared to 1.4 days in the base year. The total sales indicate that though the domestic sales have declined despite expansion in the capacity, the domestic industry has substantially increased the export sale.

74. During the POI, the cost of domestic sales declined to 91 (indexed) in POI as compared to the 100 of base year. During the same period, the selling price also declined to 91 (indexed) as compared to 100 of the base year. In terms of rupees, the cost of sales declined by Rs.39/kg. in POI as compared to base year whereas the selling price declined by Rs.6/kg. during the same period. As compared to immediate preceding year the cost of sales declined by Rs.44/kg. and selling price declined by Rs.13/kg during the same period. Profit/loss per unit shows that loss per unit declined to -29 (indexed) in POI as compared to -100 of the base year. Total loss (PBIT) shows similar trend and it declined to -13 (indexed) in POI as compared to 100 during the same period. Similarly, the return on capital employed on the domestic sales shows improvement though it remained negative throughout the injury period.

75. The above parameters indicate that on domestic sale, the domestic industry continue to suffer injury in terms of declining sales. In terms of profits and return on capital employed, the performance improved, however, it continued to suffer losses.

OTHERS KNOWN FACTORS

Volume and prices of imports from other sources

76. It has been seen that total imports from all countries increased significantly in POI. It was 1611 MT in POI. The share of imports from other than subject countries was 71.28% in POI. It was noticed that from the data provided by DGCI&S that the export price by the other countries during POI was comparable with export price of Singapore. The imports from other countries were mainly from Spain. The Authority notes that the imports from other countries are competing with the imports from

subject countries and are also competing with the domestic industry. In the application for sunset review, the domestic industry has indicated that they would be filing application against the other countries for initiating the investigation. The Authority has noted that no such application has been filed by the domestic industry.

Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

77. Demand of the product under consideration has registered a significant growth. Contraction in demand is not a possible reason, which could have contributed to injury to the domestic industry.

Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

78. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. Therefore, this factor could not have been reason to cause injury to the domestic industry

Development of technology and export performance

79. Technology for production of the product has not undergone any change. Developments in technology are not a factor of injury.

80. The domestic industry has significant export activity. The exports of the domestic industry increased by 185% in POI as compared to base year. It has also been noted that production has increasingly been used for export purpose. In 2003-04, it was 17.59% which increased to 65.85%, 84.97% and 84.67% in years 2004-05, 2005-06 and 2006-07 respectively.

Productivity of the Domestic Industry

81. Productivity of the domestic industry measured as production per day and per employee have improved considerably during POI as compared to base year.

CAUSAL LINK

82. The data shows that demand of the subject goods has increased significant in POI as compared to base year. Even with the enhanced capacity of the domestic industry is not sufficient to meet the demand in the country. In view of the gap in supply and demand, the imports are bound to take place. The share of the domestic industry in domestic sale has declined significantly in POI as compared to base year. The share of the Singapore rose from 2003-04 to 2005-06 before declining in POI. The share of China PR continued to rise from base year to POI. The share of imports of other countries mainly Spain increased substantially from base year to POI. The Authority has noted that the imports from Spain were at the comparable prices as that of Singapore. The Authority has also noted that the domestic industry has improved its exports significantly and more than 80% of its production has been accounted for export sale indicating that domestic industry has been concentrating on the export sale.

83. The Authority has also noted that domestic industry has been selling the subject goods below the reference price i.e. the price below which imports cannot come into the country. No reasonable explanation has been provided as to why the domestic industry continued to sell the product below the reference price. The Authority further notes that the selling price of the domestic industry has not changed from 2003-04 to 2005-06 though the capacity increased by 35% in 2004-05 and 68% in POI as compared to base year. In addition to that the domestic industry was in a position to utilize its capacity above 90% by increasing its export activity.

84. The above analysis indicate that the decision of the domestic industry concerning selling price, capacity addition and production was not contingent on the imports and prices further indicating that there is no causal link between imports from subject countries and injury to the domestic industry on domestic sale.

LIKELIHOOD OF CONTINUANCE OF DUMPING & Injury

Submissions by the domestic industry

85. Injury to domestic industry would recur in the event of revocation of existing anti dumping duty. The purpose and the scope of the present review is to establish whether or not cessation of existing Anti dumping duty is likely to lead to continuance or recurrence of dumping or injury. Such a likelihood may for example be indicated by evidence of continued dumping and injury or evidence that reversal of injury, partly or solely, due to existing measures or existing circumstances of the exporter or market conditions are such that they would indicate the likelihood of further injurious dumping.

86. Dumping and injury resulting there from must be established in the anti dumping proceedings indicated in pursuant to Rule-5 of the Anti Dumping Rules, 1995, while the focus shifts in a review under Rule-23 of the Anti Dumping Rules, 1995 read with first proviso of section-9A (5) of Customs Tariff Act, 1975 to the likelihood of continuation / recurrence of dumping and injury.

87. Primary practical importance for the concept of injury as applied by the Designated Authority in original investigation whether there is injury or threat of material injury, while investigation and concept of injury applied in review petition is the continuation or reoccurrence of injury in case of revocation of existing measures. It follows from the fact that injury analysis in the review proceedings focuses basically on future development of the situation of the domestic industry and the manufacturers and the exporters of the subject goods in their country of origin.

88. The reasons for differences in the two concept of injury are fundamentally different circumstances. On the one hand, new Anti dumping proceedings are initiated in pursuant to Rule-5 of the Anti Dumping Rules, 1995 and on the other hand, review proceedings are initiated in pursuance of Rule-23 of Anti Dumping Rules, 1995. The circumstances in the later case are necessarily affected by the measures in force because of the situation of the domestic industry would usually be worse, if level playing field against the dumped imports is not ensured by the Designated Authority.

89. The existence of Anti dumping measures is applied for elimination of the injury. A review investigation may lead to finding of no or reduced injury, because of

the existing measures. Consequently, within the framework of review investigation, the various injury factors cannot be interpreted meaningfully in the same way as in original Anti Dumping investigation. The analysis is, therefore to concentrate on hypothetical elements i.e. effect of cessation (or a repeal) of Anti Dumping measures.

90. The surplus production capacity in the exporting countries play an important role for assessing the likelihood of recurrence of injury. The absence of the imports originating in the country concerned or reduction in import volume are not, however, sufficient in themselves to justify the cessation or repeal of anti dumping measures. Neither do such circumstances in the review proceeding preclude commutation of potential injury caused by imports from different countries.

91. The domestic industry submits that in view of the past practice of Singapore and Chinese exporters with respect to exports to India, anti dumping duty needs to be continued.

Likelihood of Continuation of Dumping

92. The subject goods are being exported at very low and dumped prices. The Chinese and Singapore exporters have continued dumping even after the imposition of Anti-dumping duties. Thus, in a situation where the Chinese and Singapore producers have been able to export significant volumes in spite of anti dumping duties, it is natural that the volumes would only increase, if the present anti dumping duties are revoked. Dumping is likely to continue in significant manner in case anti dumping duties is not extended for another five years.

93. There are no changes in the parameters/circumstances prevailing at the time of original investigation and at present. It is evident from the data submitted above that Dumping margins are not only more than de-minimus but also significant. The circumstances, which were prevalent at the time of original investigations, continue to exist presently. It is evident that there is a likelihood of continuation of dumping. Following are some of the considerations which reflects that the dumping would continue at aggravated level in the event anti-dumping duties are revoked or not extended for the next five years.

Surplus capacities with Chinese and Singapore producers and their Export Orientation.

94. The capacities created by producers in China PR are significantly higher than demand in their local market. The huge volume of exports being made by the Chinese producers to third country markets makes it evident that the volume of imports would increase significantly in the event of revocation of anti dumping duty. Further it is clear that M/s Kaneka, Singapore from Singapore is basically an export-oriented unit. There are no domestic sales of the subject materials in Singapore. The exporter has built up huge capacities for exports only and India is the main target. Further the exporter's credentials of indulging into dumping practices even after imposition of Anti Dumping Duty by the Designated Authority has been duly established in the recently concluded Mid Term review. This being the history and behavior of M/s Kaneka, Singapore, it can be concluded that cessation of Anti Dumping Duty will lead to further intensified dumping and consequent material injury to the Domestic Industry.

95. Looking at the export price trend to India and their prevailing CIF prices to India, it is inevitable that the manufacturers of the subject goods in the event of revocation of present duty, the producers of the subject country would dump their surplus capacity into India at abnormally low prices.

Examination by the Authority

96. As has been analysed in the earlier section of this findings that dumping is continuing from subject countries. In absence of any explanation from cooperating exporters and any information from China PR, there is likelihood of continuation of dumping.

LIKELIHOOD OF CONTINUANCE OF INJURY

97. As has been analysed earlier, the injury to the domestic industry on the domestic sale continues. However, it has been noticed that the selling price of the domestic industry is not contingent or linked with the export price of the subject countries. Significantly, the exports from other countries were at comparable prices with that of Singapore. The domestic industry had, however, shown no interest in targeting the exports from other countries indicating further that the selling price of the domestic industry is not affected because of the imports from other countries. The Authority further notes that more than 80% of the production of the subject goods has been assigned for export purpose indicating that the domestic industry is mainly concentrating on export activity.

98. It is likely that the domestic industry may continue to suffer injury on the domestic sale, however, the existence of anti-dumping duty has not improved the performance of the domestic industry in the last five years indicating that factor(s) other than the dumping are dictating the prices of the domestic industry. The Authority, therefore, concludes that injury to the domestic industry and domestic sale is unlikely to impact the overall performance of the domestic industry.

I. FINAL FINDINGS

99. The Authority after considering the foregoing concludes that:

- a. Subject goods originating in or exported from subject countries have been exported to India below their normal value, resulting in dumping;
- b. The domestic industry has suffered injury;
- c. The injury to the domestic industry was however not linked to the dumped imports from the subject countries;
- d. And discontinuation of anti-dumping duties on the subject goods from subject countries may not impact on the performance of the domestic industry.

K. Recommendations

100. In view of the findings that anti-dumping duty has not impacted the performance of the domestic industry in the last five years, therefore, the Authority hereby recommend not to continue with the anti-dumping duty on the subject goods from the subject countries.

101. An appeal against this order, after its acceptance by the Central Government, shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority